काला पहाड़
उर्फ
कालाचन्द राय

लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

प्रकाशक
अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद-२०१००१ (उ०प्र०)
E-mail : lajpatraiaggarwal1058@gmail.com
Website : amarswamiprakashanvibhag.com
Ph. : 0120-2701095, 09910336715, 09810816715, 09871230321

अगस्त सन् २०१४ ई० (तेरहवां संस्करण)   मूल्य : पचास रूपये

सिंहावलोकन

''लाजपत राय अग्रवाल''
(वैदिक मिशनरी)

मुगल काल से जुड़ी प्रस्तुत पुस्तक की कहानी का इतिहास में अपना एक विशिष्ठ स्थान है, जिसे मैंने सिंहावलोकन की दृष्टि से निहारा है, इस लघु कृति को जो भी अन्तर्मन से इसका अध्ययन करेगा, उस पर इसकी अमिट छाप पड़े बिना नहीं रह सकेगी ।

विद्धान और साहित्यकार मनीषी तो साहित्य रूपी सागर में डुबकी लगा कर ना जाने कितने अनमोल रत्न प्राप्त कर लेते हैं, मेरा तो यह एक छोटा सा प्रयास है, जिसे मैंने

उपन्यास की भाषा में उतार दिया । जबकि इस इतिहास को आर्य जगत के प्रसिद्ध रचनाकार पृथ्वी सिंह बेधड़क आदि सरीखे कवियों ने काव्य रूप में भी पेश किया है ।

मैं नहीं समझता था कि यह कृति साहित्य जगत में इतना सम्मान प्राप्त करेगी । मैंने कई प्राचीन इतिहासों को इस रूप में लिखा, जिनमें दूसरी कृति "धर्म जाये भाड़ में" ने भी अच्छा सम्मान प्राप्त किया है । इन दोनों कृतियों पर मुझे गर्व है ।

हमारे देश की अवनति में जहाँ अनेकों कारण हैं वहाँ एक कारण हमारे देश में फैल रही कुरितियों एवं धर्म के नाम पर फैले हुए व्यर्थ के आडम्बर भी हैं ।

आज विज्ञान का युग है । कोई भी बात बिना तर्क व प्रमाण के नहीं मानी जा सकती । कोई जमाना था, कि जो भी उल्टा सीधा किसी धर्माधिकारी ने अपना ब्यान निकाल दिया चाहे उसके अन्तर्गत किसी का हित हो या अहित ! इस बात को किसी को भी सोचने या कहने का अधिकार नहीं होता था ।

मुगलकालीन घटनाएं जहाँ अनेकों रूपों में हमें इतिहास में पढ़ने को मिलती हैं वहाँ यह प्रस्तुत घटना भी कम दिलचस्प नहीं है ।

परन्तु इस घटना से हमें पता चलता है कि हमें जहाँ गैरों ने जबर्दस्त हानि पहुँचाई वहाँ अपने भी पीछे नहीं रहे । उनके

का निर्माण करती है, तथा लेखक को अमरत्व प्रदान करती है।

उदाहरण के रूप में, मुंशी प्रेमचन्द, बंकिम, शरद आदि-२ साहित्यकार हमारे समक्ष मौजूद हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी से समाज व देश को एक नई दिशा प्रदान की, जो हर दृष्टि से नमन् के योग्य हैं।

आज देश का ऐसा कौन सा नागरिक होगा जो अपने इन साहित्यकारों का ऋणी नहीं है, जिन्होंने जीवन भर अनेकों प्रकार के कष्ट सहकर भी सत्य का गला नहीं घोटा, अपितु अपनी लेखनी से समाज में व्याप्त बुराईयों को जड़ से उखाड़ फैंका।

पाठकों ने मेरे श्रम का महत्व समझा, इसे सम्मान दिया, मेरे लिए यह भी कम गौरव की बात नहीं है।

किमधिकम् लेखेन्................

वैदिक धर्म का–
लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

(१)

दार्जिलिंग जिले में हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं में महाल्दिराम पहाड़ से निकलने वाली महानन्दा नदी धीरे-धीरे, अटक अटक कर दक्षिण दिशा की ओर बहती है । यह दो राज्यों की सीमा बनाती थी, इनमें से पहला राज्य पौंड्रों का देश पौंड्रोवर्धन था जिसकी राजधानी थी "महास्थान" । दूसरा देश कूच या राजवंशियों का था जिसकी राजधानी थी "कूच बिहार" सिलीगुड़ी से थोड़ी ऊपर पहाड़ी की तलहटी के पास यह नदी जलपाईगुड़ी को छूती है और इसमें नई बालासान नामक नदी मिल जाती है ।

यहां पहुंचकर महानन्दा का स्वरूप बदलने लगता है और यह चौड़े सर्पिल तथा दुर्गम मार्ग से पूर्णिया और तितालाया पहुंचती है । यहां मुख्य सहायक नदियां इससे मिलती हैं ये मुख्य सहायक नदियां हैं -

डांक, पितानू, नागर, मेची * और कानकाई, अन्ततः अब ये खाये पिये मोटे अजगर का सा रूप ले लेती है और भयानक गरजन तथा खतरनाक लहरों के साथ बहती है इसके तट पर किशनगंज और बारसोई का उद्‌भव हुआ तथा ये मुख्य व्यापारिक केंद्र बन गए ।

इसके बाद मालदा जिले में प्रविष्ट होती हुई दक्षिणपूर्व की ओर बहती है । यहां इस जिले को दो बराबर हिस्सों में विभाजित करती है । यहां से तांगगान, पूर्णिया और कालिंदी के बड़े भाग मिलते हैं फिर यह दीनाजपुर के अधिकांश भाग से होकर बहती है ।

अपने उद्‌गम से २५६ मील की यात्रा करने के बाद महानंदा अंततः गौड़ नामक स्थान पर गंगा में मिल जाती है ।

गौड़ का निर्माण बारहवीं सदी में "राजा लक्ष्मण सेन"

---

* आजकल यह नदी भारत और नेपाल की विभाजन रेखा का कार्य करती है, जो सिलीगुड़ी के निकट है, मैंने इस नदी को अण्वेषण की दृष्टि से कई बार पैदल भी पार किया है, इसमें बरसात के दिनों को छोड़कर प्रायः पानी नहीं रहता, सभी नेपाली लोग इसी रास्ते से तस्करी का कार्य करते हैं। वैसे पुल भी बना हुआ है, जिस पर प्रत्येक व्यक्ति की जांच-पड़ताल की जाती है, परन्तु स्थानीय लोग अधिकतर पैदल रास्तों का ही प्रयोग करते हैं, क्योंकि पैदल रास्तों की दूरी कम पड़ती है और सरकारी जांच-पड़ताल से भी बच जाते हैं ।

-लाजपत राय अग्रवाल

(वैदिक मिशनरी)

ने किया और इसका नाम अपने पर लखनौती रक्खा । यहां मुख्य रूप से खजूर व नारियल के द्वारा गुड़ बनाया जाता था, इसलिए इसे गौड़ के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई, गौड़ को कभी लखनौती नहीं कहा गया ।

बख्तियार खिलजी नामक एक अफगान आक्रामक ने लक्ष्मण सेन को पराजित किया और अपनी राजधानी नादिया से गौड़ ले गया ।

सन् १३५० ई० में एक दूसरे आक्रामक शमसुद्दीन इलियास ने राजधानी को फिर बदला और वह राजधानी को पाण्डवा ले गया । १७ साल बाद जलालुद्दीन राजधानी को फिर गौड़ वापस ले आया ।

जिन मुसलमान आक्रामकों ने बंगाल पर विजय प्राप्त की उनकी एक सनक राजधानी बदलना भी थी । जब सुल्तान सुलेमान काराानी ने बंगाल विजय किया तब उसे गौड़ की प्रसिद्धि नहीं भायी ।

काराानी पठान था । वह काबुल के बीहड़ों पर विजय प्राप्त करके अपना रास्ता बनाते हुए बंगाल के मैदानों तक पहुंचा था । उसने सुल्तान हुसैन शाह को पराजित किया और अपना शासन बंगाल में स्थापित किया लेकिन उसे गौड़ पसन्द नहीं आया ।

गौड़ से दक्षिणपूर्व में कुछ मील दूर महानन्दा के तट पर

एक छोटा सा गांव "टांडा" था । उसे यह स्थान पसन्द आया । उसने गांव को उजाड़ दिया और वहां अपनी पसन्द और सुविधा के अनुरूप एक नगर बसाया ।

वह नगर को नया नाम देना चाहता था लेकिन उसे टांडा नाम ही अच्छा लगा, इसलिए उसने शहर का नाम नहीं बदला। उसने मस्जिदों, बाजारों तथा अपने सरदारों के लिए महलों का निर्माण करवाया । पांच वर्षों के अन्दर ही यह नगर एक महान राजधानी बन गया जहां जीवन गूंजता था ।

सुलेमान एक योद्धा और धर्मान्ध व्यक्ति था । वह मुसलमानी उत्साह तथा प्रचण्ड धर्मपरिवर्तन का युग था । सुल्तान सुलेमान ने भी अपने तरीके से अपनी सामर्थ्य भर जागीरें प्रदान कीं । यों उसने मंदिरों को अपवित्र नहीं किया लेकिन मंदिरों में पूजा पाठ को उसने कठिन अवश्य बना दिया था । सुलतान सुलेमान कठोर शासक था और उसके क्रूर पंजों में उसका साम्राज्य सिसक रहा था ।

उसने अपने हरम में जवान औरतें भर रक्खी थी । इनमें से कुछ से उसने निकाह कर लिया था और कुछ से उसने निकाह नहीं किया था लेकिन ये सभी युवतियाँ उसकी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती थीं । उसके पास प्यार करने या प्राकृतिक सौंदर्य का आनन्द लेने के लिए समय नहीं था ।

हरम में रहने वाली औरतों में से उसकी कृपादृष्टि जकिया बेगम पर विशेष थी। जकिया बेगम एक ऐसे सरदार की बेटी थी जिसने अपना धर्म परिवर्तन * कर लिया था अर्थात् मुगलों के जुल्मो सितम से तंग आकर अपने हिन्दू धर्म को छोड़ कर इस्लाम में दीक्षित हो गया था।

जकिया बेगम बहुत सुन्दर स्त्री थी उसके चेहरे के नयन नक्श इतने तीखे और लुभावने थे कि किसी भी मर्द को अपने वश में करने के लिए वह काफी थे, और उसका स्वभाव भी बहुत कोमल था। वह अपने पति को बेइन्तहाँ प्यार करती थी और उसकी पाशविक वासना को अपने कोमल स्वभाव और तीखे नयन नक्शों से सन्तुष्ट करती थी। यों यौनाचार से वह परिश्रांत हो जाती थी लेकिन उसने इसे व्यर्थ नहीं जाने दिया और उसके पैर भारी हो गये।

---

* "भारतीय मुसलमानों के हिन्दू पूर्वज मुसलमान कैसे बने?" इस खोजपूर्ण पुस्तक के लेखक हैं, "रिसर्चस्कालर राकेश कुमार आर्य एडवोकेट" जिन्होंने बड़ी खोज के साथ इस पुस्तक की रचना की, इस पुस्तक ने साहित्य जगत में अपना एक विशिष्ठ स्थान प्राप्त किया है। जन सामान्य से लेकर शोध कर्त्ताओं तक के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई है। इस महत्वपूर्ण पुस्तक को भी हमारे द्वारा ही प्रकाशित किया गया है। आप प्रकाशन से सम्पर्क स्थापित करें।

लेखक- लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)
चलभाष : ०९९१०३३६७१५

दुलारी के जन्म के बाद सुलेमान कारारनी में सूक्ष्म परिवर्तन आरम्भ हुआ। उसकी धर्मान्धता कम होने लगी और वह उन लोगों के प्रति अधिक सहिष्णु होने लगा जो इस्लाम के अनुयायी नहीं थे। यहां तक कि उसने अपनी सेना में हिन्दुओं को भर्ती करना भी शुरू कर दिया।

इन्हीं दो वर्षों के दौरान कारारनी के दो पुत्र और हुए। इनके नाम थे वाजिद और दाऊद खान, सुलेमान के पारिवारिक जीवन में सुख शान्ति थी लेकिन बाहरी दुनिया से वह सन्तुष्ट नहीं था।

वह बहुत महत्वाकांक्षी था। उसके लिए बंगाल काफी नहीं था उसने अपनी लालच भरी निगाह दक्षिण की ओर घुमाई और उसे उत्कल नजर आया। उसने उत्कल पर चढ़ाई कर दी, लेकिन उत्कल के राजा मुकुन्द राव ने उसके आक्रमण को असफल कर दिया और उसे टांडा की ओर वापस भगा दिया।

सुलेमान दुम दबा कर वापस टांडा पहुंचा। वह अपनी पराजय के विषय में सोच विचार करता रहा और फिर से आक्रमण करने की प्रतिक्षा करने लगा। महानन्दा ने सुलतान की नियति के उतार चढ़ाव देखे और वह गड़गड़ाती रही जैसे मूर्ख व्यक्ति के क्रियाकलापों पर हंस रही हो।

(२)

दुलारी नदी के किनारे पल बढ़ रही थी, उसका महल नदी किनारे बना था और ऊपर बने अपने कमरे से वह नदी के पानी को देखती रहती थी। बचपन में वह महानन्दा के तट पर खेलती थी। जैसे-जैसे वह तरुणी होने लगी, उसके सीने पर उभार आने लगे। वह शाम को शाही बजरे में सैर करती, जब वह १७ साल की हुई तब वह अपने कमरे की जालीदार खिड़कियों में से नदी को ताका करती और उसके विषय में अजीबो गरीब कल्पनायें करती रहती थी।

उसे इस बात का अहसास ही नहीं हो पाया कि कब वह नदी का एक अंग बन गई और कब नदी उसका अंग बन गई? यों उसका बचपन कभी दुखी नहीं रहा लेकिन वह एक एकाकीपन बच्ची थी। यह भी सच है कि वह अपने बाप की चहेती थी। सुलेमान उसे बहुत प्यार करता था। उसकी माँ ने भी उसकी आदतें बिगाड़ दी थीं।

इस सबके बावजूद भी वह एकाकी बच्ची थी और उसको जब एकाकीपन असहनीय हो जाता था तो वह नदी से

बातें करने लगती थी, यों तो नदी गड़गड़ाहट के अलावा कोई आवाज नहीं करती थी लेकिन वह अनजान आवाजें सुनती और उसे अपने अन्दर और संसार में शान्ति का सा अनुभव होता था।

उन्हीं दिनों उत्तर में स्थित भदुरिया राज्य से एक बलिष्ट, चमकीली आंखों वाला खूबसूरत भुइया ब्राह्मण युवक टांडा आया। इस युवक का नाम नयनचन्द राय भादुरी था। वह सुल्तान की सेना में भर्ती हुआ और अपनी बहादुरी और कामों से सेना का एक फौजदार बन गया। उसके साथ उसकी पत्नी वन्दना देवी और उनका पुत्र "कालाचन्द राय" भी टांडा आये थे।

इन १७ वर्षों के दौरान महानन्दा ने बहुत से परिवर्तन देखे थे। सुलेमान कारारनी काफी मोटा हो गया था और फौजदार नयनचन्द राय भादुरी की मृत्यु हो गई थी। उसकी जगह उसका पुत्र कालाचन्द राय सुलतान की सेना में एक सिपाही की तरह भर्ती हुआ और अपने पिता की ही भाँति निरन्तर तरक्की करता चला गया।

जब नयन चन्द राय की मृत्यु हुई तब उसकी विधवा पत्नी उसके साथ सती होना चाहती थी लेकिन उसके पिता ज्ञानेन्द्रनाथ भादुरी ने उसे सती नहीं होने दिया। उसके पिता ने कहा, "तुम्हें अपने पुत्र कालाचन्द के लिए जिन्दा रहना है।"

विवशत: परिस्थितिवश उसने पिता की इच्छा मान ली ।

वे सब शैव थे और भगवान शिव के भक्त थे । लेकिन बीच में ही ज्ञानेन्द्रनाथ वैष्णव हो गये और भगवान विष्णु की आराधना करने लग गये थे, ज्ञानेन्द्रनाथ ने कालाचन्द को भी इसी नए सम्प्रदाय में प्रशिक्षित करने का जिम्मा लिया ।

कालाचन्द की शिक्षा ब्राह्मणवादी साधना में हुई । उसने वेद और पुराणों का अध्ययन किया, हवनों में, शास्त्रार्थों में भाग लिया और पूजाओं तथा बलिदानों का संयोजन किया । यों उसकी आयु कम थी लेकिन वह एक विद्वान व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध हो गया ।

उसके सहधर्मी कहा करते थे कि- "उसके युवा शरीर में वृद्ध एवं ज्ञानी मस्तिष्क है ।"

जब कालाचन्द १६ वर्ष का हुआ तब ज्ञानेन्द्र नाथ ने निश्चय किया कि अब लड़के की शादी करने का समय आ गया है । वह भदुरिया गया । वहां उसने अपने पुराने मित्र राधामोहन लाहड़ी से भेंट की । लाहड़ी की दो विवाह योग्य पुत्रियाँ थीं, पर उसे इन लड़कियों के लिये उचित वर नहीं मिल रहा था । इन दोनों बहनों की शादी कालाचन्द से करने का निर्णय लिया गया ।

कालाचन्द ऐसे बेहूदा प्रस्ताव का विरोध करने की बात सोच भी नहीं सकता था क्योंकि वह अपने नाना की हर

आज्ञा का पालन करता था जिस आयु में अधिकांश लोग संसार में अपने लिए एक स्थान बनाने की चेष्टा करते हैं उस आयु में कालाचन्द की शादी लाहड़ी की दोनों लड़कियों अर्थात् "रूपाली" और "रूपानी" के साथ हो गई ।

कालाचन्द दो वर्ष तक भदुरिया में रहा और उसने अपने ससुर के आतिथ्य का आनन्द उठाया । वह लम्बा, छरहरा और मान्सल व्यक्ति था । उसकी आँखें लड़कियों की तरह बड़ी-बड़ी और काली थीं और उसके होठ धनुष की तरह थे। उसका रंग गोरा था सिर पर गरदन तक लम्बे-लम्बे सुन्दर बाल थे तथा भदुरिया के लोग कालाचन्द से स्नेह करते थे ।

१८ वर्ष की आयु में उसने निश्चय किया कि उसके लिए केवल एक ही पेशा है और वह पेशा है सेना में भर्ती होना, हर कोई चाहता था कि कालाचन्द पुरोहित बने लेकिन उसे बलिदानों, यज्ञों और अनन्त शास्त्रार्थों में कोई दिलचस्पी नहीं थी । वह युद्ध पसन्द करता था और उसे इसमें मजा आता था। उसने टांडा की यात्रा की । काररनी उसके पिता का आदर किया करता था, इसलिए उसने कालाचन्द को अपनी फौज में ले लिया । २३ वर्ष की आयु में वह अपने पिता की ही भांति सेना का एक फौजदार बन गया ।

कालाचन्द के फौज में भरती हो जाने की वजह से उसका परिवार परेशानी भी अनुभव करता था, लेकिन जब

वह साधारण सिपाही से फौजदार हो गया तो उसका परिवार प्रसन्न हो गया। राधामोहन लाहड़ी ने अपनी दोनों पुत्रियों को टांडा भेज दिया ताकि वे अपने पति की सेवा कर सकें, उनके साथ इन्दू बालादेवी भी आयी। इन्दूबाला देवी कालाचन्द की माँ की चाची थी। वह अधेड़ उमर की शालीन तथा सदा मुस्कराते रहने वाली महिला थी। कालाचन्द भी अपने जीवन से प्रसन्न था।

जिन वर्षों में सुलेमान कारारनी ने टांडा नगर का निर्माण किया था तभी हिन्दुओं ने भी महानन्दा के तट पर एक घाट का निर्माण करवाया। हर सुबह हिन्दू इस घाट पर स्नान करने जाते थे।

दुलारी हर सुबह इस दृश्य को देखा करती थी, ब्राह्मण वास्तव में विचित्र जीव थे, ये लोग अपने स्नान व पूजा के विषय में बहुत अधिक तुनक मिजाज होते थे और जाति तथा छूआछूत के विषय में इनकी धारणायें अनोखी होती थीं, कभी कभी वह इन ब्राह्मणों के कुछ आचरणों से क्रोधित भी हो जाती थी, लेकिन इन सब चीजों से प्रायः उसका मनोरन्जन ही होता था। वह सोचा करती कि इनके देवता असंख्य हैं जो उन छोटे छोटे मन्दिरों की मूत्तियों में रहते हैं जिनका निर्माण इन लोगों ने खुद किया है। उसे यह बात विचित्र लगती थी कि उसके पिता ने, जो कि एक कट्टर

मुसलमान था, इन मन्दिरों का निर्माण होने दिया । लेकिन दुलारी जानती थी कि उसका पिता एक भला व्यक्ति है । वह हिन्दुओं की भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाना चाहता था ।

धीरे धीरे दुलारी का यह मनोरंजन दिलचस्पी में बदल गया । अब वह यह जानना चाहती थी कि ये ब्राह्मण लोग परस्पर इस प्रकार का व्यवहार क्यों करते हैं ? उसने पण्डितों को अपने पास बुलवाया और उनसे उनकी जाति प्रथा के विषय में बातचीत की और उनके उपदेशों को सुना, उसे यह जान कर आश्चर्य हुआ कि ये ब्राह्मण भी उतने ही धर्मान्ध हैं जितने कि मुसलमान ! धार्मान्धिता के उस युग में भी वह अन्य धर्मों को सहिष्णुता की दृष्टि से देखती थी ।

उसे यह जान कर क्रोध आया कि पण्डितों ने उसके महल में आने के बाद अपना शुद्धिकरण किया, क्योंकि वे एक मुसलमान के घर में आकर उससे बातचीत करके अशुद्ध हो गए थे, लेकिन उसका क्रोध शीघ्र ही समाप्त हो गया ।

उसकी माँ को यह सब पसन्द नहीं था । उसकी माँ ने कहा- "दुलारी ! तुम मुसीबत में पड़ जाओगी, तुमने उनसे क्या सीखा है" ?

"यही, अम्मीजान ! कि हम सब मनुष्य हैं और एक सा आचरण करेंगें, चाहे हम हिन्दू हों या मुसलमान !"

"तुम्हारे अब्बाजान इसे पसन्द नहीं करेंगें ।"

''अम्मीजान ! अब्बा हुजूर को यह सब मालूम है, और फिर इसमें बुराई भी क्या है ? आपके अब्बा भी तो हिन्दू ही थे जिन्होने धर्म परिवर्तन* कर लिया था, मेरे विचार से यह सब बेकार की बातें हैं ।''

''दुलारी !''

''अम्मीजान ! इसमें दहशत की कोई बात नहीं है, आप तो जानती ही हैं हिन्दू माँ भी अपनी सन्तान को उसी तरह से प्यार करती है जैसे आप मुझे ! मातृत्व तो एक सार्वभौमिक धर्म है ।''

माँ ने अपना सिर अविश्वास और भय से हिलाया ।

''दुलारी ! ऐसी बातें सोचना भी खतरनाक है, तुम इन बातों पर मुझसे बहस मत करो ।''

उसकी कनीजें उसके चारों तरफ इकट्ठी हो गई थीं । ये कनीजें बातूनी, खूबसूरत और जिन्दादिल थीं । और इनमें से कुछ के नाम थे गुलशन, रबिया, परवीन, कुदसिया, मुन्नी,

---

* धर्म परिवर्तन का रोग बहुत पुराना है, मैंने एक पुस्तक अलग से लिखी है कि-जिहाद के नाम पर दुनिया को कैसे मुसलमान बनाया गया? इस पुस्तक में मैंने हदीसों एवं त्वारिखों के पुष्ट प्रमाण देकर प्रस्तुत विषय पर प्रमाणित सामग्री का संग्रह किया है, जो इतिहास अन्वेषकों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इस प्रुस्तक को भी आप प्रकाशन से मंगा सकते हैं।

लेखक- लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

रेहाना आदि ।

गुलशन ने कहा- ''शहजादी ! हमें आपके बारे में डर है आप बहुत अजीबोगरीब बातें करती हैं ।''

दुलारी धीरे से मुस्करा दी, उसकी हरेक बात का जवाब हमेशा ही ऐसी मुस्कान होती थी ।

अपनी जालीदार खिड़की से बाहर देखते ही उसे ब्राह्मण स्नान करते दिखलाई पड़े । और वह यह समझ गई थी कि ये लोग इतनी देर तक स्नान क्यों करते हैं ? सूरज पर पानी क्यों चढ़ाते हैं ? पद्मासन लगाकर देवताओं का ध्यान क्यों करते हैं ? फिर एकाएक वह सीधी बैठ गई और उसके चेहरे पर एक नकाब सी चढ़ गई ।

कालाचन्द राय भादुरी शाही अन्दाज से चलते हुए घाट पर आया । वह भी ब्राह्मणों की सामान्य वेशभूषा में था, उसने एक सफेद धोती पहन रक्खी थी, उसका ऊपरी अंग नंगा था और कन्धे पर यज्ञोपवीत पड़ा हुआ था ।

कालाचन्द के शरीर की पेशियाँ भी वैसी ही गतिमान थीं जैसे कि महानन्दा की लहरें ! उसके बाल उसके कंधों पर लटक रहे थे, उसके मुंह पर बड़ी-बड़ी मूंछें थीं तथा वह शान्त एवं पवित्र लग रहा था और उसकी आँखों में सपने तैरते नजर आ रहे थे ।

वह उसे अपनी खिड़की से देख रही थी, उसने अब तक

तट पर जितने भी पुरूष देखे थे, उनमें सबसे अधिक सुन्दर कालाचन्द ही था, वह उसे घूर रही थी और उसे बेचैनी हो रही थी, उसके हाथ कांप रहे थे, मुंह लाल हो गया और बदन में झुरझुरी सी उठने लगी, उसे आश्चर्य हुआ कि उसे यह क्या हो गया है ?

कोई बीस गज की दूरी पर लगभग दस सैनिक खड़े थे, वे उस समय पूजा में व्यस्त कालाचन्द को आदर के साथ देख रहे थे, जब उसने पूजा पूरी कर ली और वह वापस लौटने लगा तो सैनिक भी उसके पीछे पीछे चलने लगे, वह उसकी आंखों से ओझल ना हो जाये, इसलिए दुलारी ने एक बार भी पलक नहीं झपकाई ।

जब कालाचन्द आंखों से ओझल हो गया तो दुलारी थक कर बेहोश हो गई, कालाचन्द को देखने से उसके जिस्म में जो तनाव उत्पन्न हुआ था वह समाप्त हो गया और वह कमजोरी का अनुभव करने लगी थी ।

वह कौन है ? कहाँ से आया है ? कहाँ रहता है ? क्या करता है ? सैनिक उसके पीछे पीछे आदर के साथ क्यों चलते हैं ? ऐसे सैकड़ों प्रश्न उसके मन में उठ रहे थे ।

उसके मन में घबराहट हो रही थी, उसे ताज्जुब हो रहा था कि उसे ऐसा क्यों हो रहा है ? उसने फिर खिड़की से बाहर झांका पर वहाँ कोई नहीं था उसे निराशा और दुख

हुआ।

अगले दिन खिड़की के पास बैठ कर वह उसके आने की प्रतीक्षा करने लगी और वह अपने नियत्त समय पर आया भी, इसके बाद हर बार जब वह आता तो उसकी दशा ऐसी ही हो जाती, स्वभावत: अब उसे रोज देखना उसके लिए अनिवार्य सा हो गया था।

दुलारी की भूख प्यास मानों समाप्त ही हो गयी हो, हर समय वह कालाचन्द के ही सपने अपने दिल में संजोये रहती, और बड़ी बेकरारी से सुबह का इन्तजार करती।

कभी-कभी मायूस होकर वह अपनी कनीजों में से गुलशन जिससे उसको बड़ा लगाव था, अपने पास बुलाती और कालाचन्द के बारे में गुफ्तगू करती।

क्यों गुलशन तुमने उसका मस्त चेहरा देखा ?

शहजादी ! आपको क्या हो गया है।

कुछ भी तो नहीं, गुलशन ! मैंने ऐसा बाँका और सादगी भरा जवान नहीं देखा, उसके शरीर में एक अजीब सा आकर्षण है।

शहजादी ! मैं ये सब तुम्हारे हक में ठीक नहीं समझती, तुम नहीं जानती तुम किधर जा रही हो ? खुदा किसी को ऐसी आग में ना झोंके जो लगाये न लगे और बुझाये न बुझे, शहजादी ! ये इश्क का नशा बहुत बुरा होता है।

गुलशन ! तुम नाहक ही परेशान हो रही हो, ऐसा कुछ भी तो नहीं है। अब तुम जाओ और मुझे अकेला छोड़ दो।

उसकी यादों में खोये-खोये दुलारी कब सो गयी उसे पता ही नहीं चला, वह उठी तब, जब उसके कानों में खिड़की से बाहर पक्षियों के चहचहाने की आवाज आई, और फिर वही रोजाना का दृष्य, घाट पर ब्राह्मणों का स्नान , वही भीड़-भाड़, वही चहल-पहल, और अचानक दिखाई दिया उनके बीच कालाचन्द राय, जिसे वह रोजाना की तरह देखती-देखती सुध-बुध खो बैठी।

सहसा उसकी चेतना वापिस आई और सामने अम्मीजान को खड़े पाया।

दुलारी !

जी अम्मीजान !

तुम्हें क्या हो गया है ? आजकल मैं देखती हूँ , तुम कुछ खोई खोई सी नजर आती हो, मेरी बच्ची ! मैंने तुम्हें बहुत बार समझाया है कि इस तरह की बातें तुम्हारे हक में ठीक नहीं है, तुम्हारे अब्बाजान सुनेंगे तो क्या कहेंगे ?

अम्मीजान ! हम अब्बा हजूर से खुद बात करेंगे, इसमें हर्ज ही क्या है ?

तुम्हारी अकल पर पत्थर पड़े हैं, मालूम होता है तुम्हारे ऊपर कम्बख्त शैतान हावी हो गया है, तो इसमें कोई क्या

कर सकता है ?

अम्मीजान ! आप नाहक ही परेशान हो रही हैं, ठीक है आप हमें तनहां छोड़ दीजिये........दुलारी ने बड़ी ही तुनक मिजाजी से जवाब दिया ।

दुलारी रोजाना की तरह खिड़की से घाट की ओर देखती और मन ही मन स्नान करते हुए ब्राह्मणों के बारे में न जाने क्या-क्या सोचती रहती थी ।

सूचना

मेरे द्वारा रचित बहुचर्चित पुस्तक जिसे काला पहाड़ नामक पुस्तक की तरह ही पाठकों द्वारा बहुत सम्मान मिला वह पुस्तक-''धर्म जाये भाड़ में'' अति शीघ्र छप कर आ रही है । इच्छुक सज्जन प्रकाशन से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त कर सकते हैं ।

वैदिक धर्म का...............

लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

३

सुलेमान काराररनी ने उत्कल पर फिर आक्रमण करने का निश्चय किया, उसने अपंनी फौज इकट्ठी की और उत्कल की ओर कूच कर दिया । कालाचन्द भी इस आक्रमण में भाग लेना चाहता था पर सुलेमान ने उसे रोक दिया, एक युवा सैनिक के लिए अभी युद्ध के अनेक अवसर बाकी थे ।

निराश और दुखी कालाचन्द अपने कर्तव्यों का पालन एक कठपुतली की तरह करता था, दुलारी को इस विषय में कुछ भी मालूम नहीं था, उसे अगर कुछ मालूम था तो यह कि वह रोज महानन्दा में स्नान करने आता है और वह उसे अपना दिल दे बैठी है, जब उसे यह महसूस हुआ कि वह उससे प्यार करने लगी है, तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ । लेकिन वह इन सबसे अप्रसन्न नहीं थी ।

एक दिन उसने अपनी कनीजों से कहा- " यह सब दिन पै दिन कुछ ज्यादा ही दुश्वार होता जा रहा है ।"

गुलशन ने कहा- "शहजादी, आप मोहित हो गई हैं ।"

उसने धीरे धीरे कहा- "गुलशन ! मैं शायद मोहब्बत मे

फंस गई हूँ।"

रेहाना ने भयभीत आवाज में कहा- "एक हिन्दू के साथ मोहब्बत ? वह तो काफिर है !"

दुलारी की आंखों से गुस्से की चिन्गारियाँ फूटने लगी।

"तो वह हिन्दू होने के कारण काफिर है ? वह मूर्तिपूजक है इसलिए वह काफिर है ? वह मन्दिर जाता है इसलिए काफिर है ? और मैं काफिर नहीं हूँ ? क्यों यही बात है न ?"

कनीजें दुलारी के गुस्से से घिघियाने लगीं।

रबिया ने दबी जुबान में कहा- "शहजादी ! आप तो नाहक गुस्से हो गई।"

"हाँ ! मैं गुस्से में हूँ, क्या दुनिया में आदमी और औरत जैसी कोई और चीज नहीं है ? क्या दिल नाम की कोई चीज नहीं है ? क्या प्यार और मोहब्बत जैसी कोई दूसरी चीज नहीं है ? तुम और कितनी बेवकूफ हो सकती हो ? हिन्दू और मुसलमान होने से ज्यादा बुनियादी बात यह है कि- "वह एक मर्द है और मैं एक औरत हूँ।"

कनीजों ने अपने सिर झुका लिए, वे कह भी क्या सकती थीं ? उनकी शहजादी एक हिन्दू के मोहजाल में फंस गई है और समझ रही है कि उसे इश्क हो गया है। एक सुलतान की बेटी का ऐसी वासनाओं का शिकार होना खतरनाक है।

लेकिन वे जानती थीं कि वे सिर्फ कनींजे हैं और फिर वे कर भी क्या सकती हैं ?

दुलारी द्रवित हो गई, उसे गुस्सा होना अच्छा नहीं लगता था । गुस्सा पागलपन है । वह आजकल इतनी विचित्र क्यों हो गई है ? उसे लगता है कि वह अपने आपको बिलकुल नहीं समझ पा रही है ।

उसने द्रवित होकर कहा- मुझे माफ कर दो, मैं प्यार में पड़ गई हूँ, और तुम सब इसे समझोगी नहीं ।

गुलशन ने कहा- शहजादी ! हम सब आपसे बेइन्तहाँ प्यार करती हैं । हम आपकी खुशी के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं ।

दुलारी ने तत्काल कहा- "अच्छा उस आदमी का पता लगाओ कि वह कौन है ?"

शहजादी ! इसका पता भी मैं लगा चुकी हूँ, वह "कालाचन्द राय भादुरी" है और वह अपनी फौज में ही फौजदार है, गुलशन ने सहमी और दबी-दबी सी आवाज में कहा।

"तुमने मुझे कभी बताया नहीं ?"

"माफी चाहती हूँ, शहजादी ! पर आपने कभी पूछा भी तो नहीं ?"

"क्या वह शादीशुदा है ?"

"हाँ ! शहजादी, उसकी दो बीवियाँ हैं ।"

दुलारी एक साथ जोरों से हंसने लगी, लेकिन उसकी हंसी विचित्र सी थी।

"तब मैं उसकी तीसरी बीवी बनूंगी, मैं उससे इश्क करती हूँ और मैं उससे निकाह करूँगीं।"

मुन्नी की आंखों से डर झांक रहा था। उसने शहजादी से कहा- "पर आपकी इस ख्वाहिश के बारे में सुलतान को कौन बतायेगा ?

"जब अब्बा हुजूर लड़ाई से वापिस लौट कर आएंगे, तब मैं खुद ही उन्हें इस बारे में बताऊँगी।"

कनीजों की जुबानें बन्द हो गई क्योंकि यह तो कुछ जुर्रत से ज्यादा ही हिम्मत का काम था। वास्तव में तो यह एकदम पागलपन की बात थी।

"वह क्या है ? कौन है ?" दुलारी के मन में सैकड़ों ऐसे सवाल उठ रहे थे और वह हर सवाल के जवाब के बारे में जानना चाहती थी।

तभी गुलशन फिर कहने लगी- "वह हिन्दू है और जाति से ब्राह्मण है"

मैं जानती हूँ कि वह ब्राह्मण है, लेकिन जिस अन्दाज से तुम कह रही हो उससे तो लगता है जैसे वह कोई हौव्वा हो।"

"लेकिन आपसे शादी करने का मतलब यह होगा कि उसकी जात खराब हो जायेगी।"

दुलारी के चेहरे पर व्यंग की रेखाएं उभर आईं।

"हम जात को खराब करेंगे ? हम धर्म को भृष्ट करेंगे ? हम इन बेफकूफी भरी परम्पराओं के खिलाफ संघर्ष करेंगे, हमारे प्यार में हिन्दू और मुसलमान एक होंगे।"

परवीन ने फुसफुसा कर कहा- "शहजादी ! ऐसी बातें करना खतरनाक है।"

मौत को भी दावत देना खतरनाक होता है फिर भी हम लोग मौत को गले लगाते हैं। आखिरकार हम सभी को कभी ना कभी तो मरना ही है, फिर हम इश्क के लिए ही क्यों ना मरें ?"

उसकी कनीजों के चेहरे फीके पड़ गए।

कुदसिया बोली- "शहजादी ! लेकिन वह आपके बारे में कुछ जानता तक नहीं है, आपका यह प्यार एक तरफा है।"

इसे मैं आज ही देखूँगी, शाम को हम लोग शाही बजरे में नदी की सैर करेंगे और गुलशन ! तुम इस बात का इन्तजाम करोगी कि वह नदी के किनारे पहुँच जाए।"

गुलशन भयभीत लग रही थी, उसने आश्चर्य से पूछा- "यह कैसे होगा, शहजादी ?"

उसके पास सिर्फ यह पैगाम भेज दो कि यह सुलताना की इच्छा है।"

"शहजादी ! सुलताना यानी आपकी अम्मी हुजूरा की

इच्छा ! आपकी यह इच्छा हम सबको फांसी के फन्दे तक पहुंचा देगी।"

"यह मेरा हुक्म है, गुलशन ! अगर शाम को वह नदी के किनारे नहीं पहुंचा, तो मैं तुम्हें फांसी के फंदे तक पहुंचा दूंगी।"

गुलशन ने गले में अटका हुआ थूक निगला और वह बदहवास सी हो गई। वह सोच रही थी कि यह शहजादी का सरासर पागलपन है, उसे इश्क का भूत सवार हो गया है।

दुलारी ने कनीजों से कहा- "तखलिया, मैं अकेले रहना चाहती हूँ, तुम सब जाओ।" कनीजों ने सिर झुकाया और वहां से चली गई।

दुलारी खिड़की से बाहर झांकती रही, नदी शान से बह रही थी। उसके होंठों पर मुस्कान थिरक गई। वह सोच रही थी कि वह आज शाम उसे देखेगी और फिर वह भी उससे ठीक उसी तरह इश्क करने लगेगा, जैसे वह करती है।

लेकिन बात बिल्कुल उल्टी बैठी, वह आया और एक सैनिक की तरह सीधा खड़ा रहा, उसकी आँखों में कोई भाव नहीं थे, शहजादी दुलारी पैदल ही उसके सामने से अपनी कनीजों के साथ गुजरी, वह घाटों पर निरर्थक घूमती रही और बारबार उसके चेहरे की ओर देखती रही। उसके चेहरे पर एक सपाट नकाब की तरह कोई भाव नहीं थे, बजरा

आया पर वह उसमें चढ़ी नहीं, वह कालाचन्द को घूरती रही और उसे यह बात टीसने लगी कि उसने उसकी तरफ नजर तक भी नहीं उठाई। उसे स्वयं अपना कृत्य एक बेशर्म छिनाल सा प्रतीत हुआ और उसकी आँखों में आंसू भर आए, वह अपने किले में वापस लौट आई।

हालांकि इससे उसके दिल पर चोट लगी थी लेकिन उसका प्यार और अधिक गहरा हो गया था। वह सोच रही थी कि वह बहुत सज्जन व्यक्ति है। ऐसी सज्जनता विरल ही होती है और विशेषकर फौज में काम करने वालों में ! ऐसा सोच कर उसने निश्चय किया कि वह अगर शादी करेगी तो सिर्फ उसी से, अन्यथा जिन्दगी भर हमेशा कुंआरी ही रहेगी। अब वह अपने अब्बा की वापसी का बेकरारी से इन्तजार करने लगी, और इस इन्तजार के दौरान वह बराबर खिड़की से बाहर झाँकती रहती थी।

अब तो दुलारी के दिन उसकी याद की खुशबुओं से तर होते, रातें उसके ख्वाबों से गुलो-गुलजार होती। वह उसमें खो सी गई थी। अब शहजादी बेचैनी से अपने अब्बा की प्रतीक्षा कर रही थी, और अन्त में सुलतान उत्कल से पराजित होकर वापिस लौटा। इसलिए वह चिड़चिड़ा और क्रोधी हो गया था। वह गुस्से से गरज रहा था, उसके इस्पाती पंजे की जकड़ से सारा शहर कांप उठा था, लेकिन जब वह हरम में

पहुँचा तो उसका सारा गुस्सा काफूर हो गया और जब वह अपनी बेटी से मिला तो उसका चेहरा अपनी बेटी के प्यार से चमकने लगा। क्षण भर को वह अपनी पराजय, निराशा और दुखों को भूल गया।

अब हरम की औरतें उसे लेकर झगड़तीं, क्योंकि अब वह एक क्रोधी शेर नहीं रहा था। वह एक ऐसा मोटा आदमी हो गया था जिसे अच्छे खाने, अच्छी शराब और अच्छी औरतें पसन्द आती थीं। वह नरम गद्दों और शानदार दीवानों पर लोटता, शराब पीता और इन छोटे मोटे आनन्दों से खुश रहता।

उत्कल नरेश से हुआ युद्ध केवल एक दुःस्वप्न बन कर रह गया था-एक ऐसा दुःस्वप्न जिसे अब वह भूल जाना चाहता था।

दुलारी उसके पास आई, उसने उसे अधमुन्दी आँखों से देखा और बैठ गया। उसने शराब का जाम किनारे रख दिया और अपने होठों को पोंछा। उसने अपने चारों तरफ की औरतों की ओर देखा और शाही अंदाज में हाथ हिला कर उनसे जाने के लिए कहा। वे सब खड़ी हुई और कमरे से बाहर चली गई। जकिया बाहर निकलने में हिचकिचा रही थी पर उसने उसकी तरफ क्रोध भरी दृष्टि से देखा, वह भी चुपचाप बाहर निकल गई।

दुलारी ने धीरे से कहा- "अब्बाजान ! मैं आपसे कुछ मांगना चाहती हूँ,"

उसने प्यार से कहा- "इधर आओ, मेरी बच्ची !"

वह उसके पास जाकर बगल में बैठ गई, और उसने अपना सिर सुलतान के सीने पर रख दिया । सुलतान उसके बालों से खेलने लगा ।

"अब्बाजान ! जो कुछ मैंने कहा, आप उसे नहीं सुनेंगे क्या ?"

उसने सिर हिलाया । उसे कभी अपनी बेटी की इच्छाओं और तमन्नाओं के विषय में चिन्ता नहीं रही, क्योंकि उसकी चाहें कुछ भी हों वह हमेशा सीधी और सरल ही होती थी ।

"अब्बाजान ! मैं शादी करना चाहती हूँ ।"

इतना सुनते ही सुलतान के चेहरे से मुस्कान गायब हो गई और जिन हाथों से वह बाल सहला रहा था, वे एकाएक कठोर पड़ गए । उसने अटक अटक कर कहा- " १७ साल की एक लड़की की ऐसी अर्ज कुछ अजीब सी है ।"

"अब्बाजान ! मुझे कभी ना कभी तो शादी करनी ही है, फिर अभी क्यों न कर लूँ ?"

उसका तनाव फिर टूट गया । यह लड़की मुसीबत बनने जा रही है । उसे इसके लिए किसी सरदार की खोज करनी होगी । उसे एक चुस्त, चालाक और अच्छे व्यक्ति को

सावधानी से ढूँढना होगा और यह एक बड़ा काम है ।

उसने पूछा- "मेरी बच्ची, क्या यह इतना महत्वपूर्ण है?"

"हां ! अब्बाजान, "मुझे एक आदमी से इश्क हो गया है।"

उसने उसके बालों को नोच लिया और दुलारी इस नोच खसोट के कारण धीमें से चीख पड़ी । वह छोटी सी लड़की बहुत अजीब थी और किस वक्त क्या कर बैठे यह कोई नहीं जानता था । वह उसे बहुत प्यार करता था और चाहता था कि वह सदैव खुश रहे, लेकिन वह उसकी पीठ पीछे क्या करती रही ? तब उसे लगा कि वह उसके बालों को बहुत जोर से पकड़े हुए है और इससे उसे दर्द हो रहा है । उसने दुलारी के बाल छोड़ दिए । उसने चिड़चिड़ाहट और गुस्से से पूछा- "कौन है वह आदमी ?"

दुलारी ने सुलतान के अन्दर हुए परिवर्तन को महसूस कर लिया था । वह यह जानती थी कि उसकी बातों से अब्बाजान के दिल को धक्का लगेगा, लेकिन उसे इस बात के लिए तैयार रहना ही था और अब वह इतना आगे बढ़ चुकी थी कि वहां से वापस नहीं लौट सकती थी ।

उसने फुसफुसा कर कहा- "उसका नाम कालाचन्द राय भादुरी है ।"

उसका तनाव टूट गया और वह मुस्कराने लगा यह तो

केवल किशोरावस्था का प्रेम है । हर लड़की बहादुर आदमी को चाहती है और कालाचन्द तो फिर सुन्दर भी है ।

''क्या फौजदार ?'' उसने पूछा ।

''जी हां ! अब्बाजान ।''

''मेरी बच्ची ! वह तो हिन्दू है ।''

''जी हां ! अब्बाजान ।''

''और वह एक मामूली आदमी है ।''

उसने सुलेमान के सीने से अपना सिर उठाया और उसकी क्रोधित आंखों में झांक कर देखा ।

''अब्बाजान ! वह एक मामूली आदमी नहीं है, क्या मैं आपकी बेटी नहीं हूँ ?''

वह सहृदयता से मुस्कुरा कर बोला- ''तो तुम उसकी परख कर चुकी हो ?''

''मैं उसको परख चुकी हूँ, वह बहुत सज्जन और आदर के योग्य है, वह शाही ढंग से चलता है । मैं जानती हूँ कि वह ब्राह्मण है तथा विद्वान है, वह बहुत सुन्दर है, मैं उसे रोज उस समय देखती हूँ जब वह महानन्दा में नहाने आता है, अब्बाजान ! मैं उससे प्यार करती हूँ, मैं सिर्फ उसी से निकाह करूँगी ।''

उसने दुलारी के कन्धे थपथपाए, और उसके गाल सहलाते हुए कहा- ''सिर्फ उसी से ?''

लेकिन वह बहुत गंभीर और सन्जीदा थी । उसने जोर देकर कहा- ''मेरा फैसला अटल है ।''

सुलेमान कारारनी ने गहरी सांस ली ।

''बेटी तुम बहुत जिद्दी हो, क्या वह भी तुम्हें प्यार करता है ?''

उसने सिर झुका लिया, जब उसने सिर उठाया तो उसकी आंखों में आँसू भरे हुए थे ।

दुलारी ने बहुत धीरे धीरे फुसफुसा कर बहुत दुखी आवाज में कहा- ''अब्बाजान ! उसे तो पता भी नहीं है कि मैं भी कोई चीज हूँ ।''

सुलतान के कहा- ''या अल्लाह ! तुम उससे इश्क करती हो और उसे तुम्हारे बारे में पता तक भी नहीं है ?'' परिस्थिति की विडंबना से वह मुस्कुरा पड़ा, फिर वह खिलखिला कर हंस पड़ा। ''पगली कहीं की ! ऐसी बात कभी किसी ने सुनी है ?''

दुलारी कुछ नहीं बोली उसने उसे हंसने दिया ।

सुलेमान उसका गम्भीर चेहरा देख कर शान्त हो गया ।

उसने कहा- ''ठीक है, मैं उम्मीद करता हूँ कि पठान की बेटी को उसके प्यार के बदले प्यार मिलना चाहिए और अगर वह तुम्हारे प्यार के जवाब में प्यार नहीं करेगा तो मैं उसके टुकड़े टुकड़े कर दूँगा, हम देखेंगे ।''

जब दुलारी चली गई तो वह फिर शराब पीने लगा । उसका परिहास फिर लौट आया और वह खिलखिला कर हंसने लगा ।

अगले दिन सुलतान ने अपने वजीर सैयद हैदर हुसैन को बुलवाया । वैसे सुल्तान सुलेमान बादशाह था लेकिन वह सैयद हैदर हुसैन का आदर सम्मान उसकी उमर तथा विवेक के लिए करता था ।

उसने कहा- "मेरी बेटी फौजदार कालाचन्द राय से प्यार करती है, क्या आप ऐसे रिश्ते को मुमकिन समझते हैं ?"

बूढ़े वजीर ने आश्चर्य से कहा- "आलमपनाह ! क्या आप दुलारी को एक काफिर के साथ निकाह करने की इजाजत देंगे ?"

सुलतान ने मुस्कुरा कर कहा- "मां बदौलत जानते हैं कि वह एक बहादुर आदमी है, उसका बाप भी एक बहादुर फौजदार था । प्यार करने वालों के बीच मजहब क्या होता है ?"

स्तब्ध होकर वजीर ने कहा- "क्या कालाचन्द ने शहजादी पर नजर उठाने की हिम्मत की है ?"

"सैयद साहब ! बात बिल्कुल उल्टी है । दुलारी ने कालाचन्द पर नजर उठाई है, वह तो इस बारे में कुछ भी नहीं जानता । मैं यह रिश्ता चाहता हूँ ।"

वजीर हैदर हुसैन अपनी दाढ़ी सहलाने लगे ।

''हम यह रिश्ता तभी कर सकते हैं जब वह इस्लाम कबूल कर ले ।''

''हमारी शहजादी से शादी कराने के लिए कुछ भी करो, वह बहुत दुखी है ।''

''आलमपनाह ! मुझे क्या करना है ?''

''जल्द से जल्द उसके पास हमारा पैगाम भिजवा दो ।''

वजीर ने कालाचन्द को बुलवाया । वह तत्काल आया, वह अपनी जवानी से सज रहा था, और शानदार वस्त्रों से वह और भी अधिक खूबसूरत लग रहा था । उसने झुक कर वजीर को सलाम किया ।

वजीर प्रभावित था, कोई भी स्त्री इस आदमी से प्यार कर सकती है । इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि दुलारी इससे प्यार करने लगी थी, उसमें वे सभी गुण थे, जो किसी भी स्त्री को दीवाना बना सकते थे ।

वजीर ने कहा- ''फौजदार मेरी बगल में बैठो ।''

युवक के चेहरे पर परेशानी के भाव झलक रहे थे ।

''हुजूर ! मैं खड़ा ही अच्छा हूँ ।''

''कालाचन्द ! सुनो जो मैं कहता हूँ, वह तुम्हें मानना चाहिए, यहाँ आओ और मेरी बगल में बैठो ।''

असमंजस में कालाचन्द वजीर की बगल में बैठ गया ।

वजीर आगे बोला- "सुलतान की तुम पर मेहरबानी है, बल्कि मैं तो यही कहूँगा उनकी साहबजादी की नजरें इनायत तुम पर हैं । आलमपनाह की ख्वाहिश है कि तुम शहजादी से निकाह कर लो ।"

"निकाह" ! कालाचन्द एकदम चौंक पड़ा ।

"हाँ, निकाह ! लेकिन इससे पहले तुम्हे मुसलमान बनना होगा ।"

उलझन के भाव उसके चेहरे से गायब हो गये, यह बेहूदा बात थी, प्रस्ताव बेवकूफी से भरा था, उसके चेहरे पर गुस्सा उभर आया और वह एकदम तमक कर खड़ा हो गया ।

"कभी नहीं," उसने कहा ।

वजीर ने चेतावनी दी कि यह शाही हुकम है । "सुलेमान से "नहीं" कह कर कोई जिन्दा नहीं रह सकता, कालाचन्द!"

कालाचन्द का मन हुआ कि वह जोर से हंस दे । उसे आश्चर्य हुआ कि कहीं वह कोई स्वप्न तो नहीं देख रहा है ।

"शाहीहुक्म ! मजाक है, मैं सुलतान की बेटी से क्यों शादी करूँ ? मेरी पहले से ही दो पत्नियाँ हैं, मैं तीसरी पत्नी की कामना क्यों करूँ और फिर वह भी एक मुसलमान की लड़की ?"

"शहजादी यही चाहती है ।"

हजूरेआला ! "मैं ही क्यों ? फौज में अन्य भी तो सैकड़ों सरदार हैं, वह जिससे चाहे शादी कर सकती है । वे इस सम्बन्ध के लिए अपनी जिन्दगी तक देने को तैयार हो जायेंगे, मुझे इससे कुछ लेना देना नहीं ।"

बूढ़ा वजीर गुस्से से चीखा-चिल्लाया नहीं, वह शान्त था लेकिन उसके शब्द तीखे और तेज थे, "कालाचन्द ! तुम बेवकूफ हो, तुम्हारी इस हरकत का नतीजा खतरनाक होगा।"

"यह तो और भी अधिक हास्यास्पद बात होगी, हममें से एक जरूर पागल है, जो कि हम ऐसी फिजूल बातें कर रहे हैं, मैं एक मामूली सा फौजदार इन्सान हूँ ।

कालाचन्द की आंखों में एक बार तो कामुकता की झलक नजर आने लगी, परन्तु वह तुरन्त ही सम्भल गया, और बड़े स्वाभिमान के साथ उसने बूढ़े वजीर से कहा- हुजूर! आप जानते हैं कि आप क्या कह रहे हैं ? भला एक शहजादी मुझसे शादी क्यों करेगी ? ऐसा उसने मुझमें क्या विचित्र देखा है ? मेरी दो बीवियाँ पहले से ही मौजूद हैं, उनके बच्चे भी हैं, जो जी-जान से मुझे चाहती हैं, भला क्या इन हालातों में तीसरा निकाह करना मेरे लिए जायज होगा ?

यह हमारे हिन्दू धर्म के खिलाफ है हुजूर ! ऐसा मत करिये, मैं ऐसा अपने जीते जी कभी नहीं करूँगा, आप

जाकर आलीजाँ को समझाइये, तथा उनको ऐसा अनुचित कार्य करने से रोकिये । हो सकता है कि आलीजाँ के समझाने बुझाने पर शहजादी उनकी बात मान जाये, और शहजादी के ऊपर से यह इश्क का भूत उतर जाये ।

कालाचन्द की यह बातें पूरी भी नहीं हुई थी कि बूढ़ा वजीर गुस्से से तमतमा उठा, और उसने अपनी पूरी ताकत से चीख कर कहा- कालाचन्द ! तुम अभी मांबदौलत की आदत से बेखबर हो । तुम्हें वह कल ही फांसी के तख्ते पर चढ़वा देंगे ।

मेरे बच्चे ! मैं नहीं चाहता कि सुलतान तुम्हें दुनियाँ से नेस्तोनाबूद (समाप्त) कर दें । मुझे तेरी जवानी पर रहम आता है, तू जिद्द मत कर, मेरी फरियाद पर गौर फरमा और मेरा कहा मान कर तू शहजादी से निकाह कर ले, फिर देखना दुनियाँ की हर ऐशो-इसरत तेरे कदमों में होगी, तुम बादशाह सलामत के दामाद कहलाओगे, सारी सलतनत पर तुम्हारा रुतबा होगा । इसलिए तुम यह बेवकूफी मत करो, अपनी जिद्द छोड़ कर मेरी अर्ज मान लो, और शहजादी के साथ निकाह करना कबूल कर लो ।

वजीर अपनी बात कह ही रहा था कि अचानक कालाचन्द की आंखें गुस्से से लाल हो गयी, होठ फड़फड़ाने लगे, शरीर में कम्पन पैदा हो गई, और वह थरथराती हुई

आवाज़ में बोला.........हे भगवान ! मुझे शक्ति दे, क्या मैं इतना गिर गया हूँ कि एक शहजादी के लिए अपना धर्म भी त्याग दूँ ! मैं उससे निकाह करके नरक में नहीं जाना चाहता।

हुजूर ! मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिये, मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि मैं क्या करूँ ?

बूढ़े वजीर ने हमदर्दी दिखाते हुए कहा-कालाचन्द ! तुम नहीं समझोगे, मेरी यह दाढ़ी के बाल धूप में सफेद नहीं हुए हैं। जो हालत शहजादी साहिबा की तुम्हें देख कर हुई है तुम उसका ख्याल भी नहीं कर सकते, अगर वही इश्क का भूत तुम पर सवार होता तो तुम्हें इसके असर का अहसास होता कि मोहब्बत क्या चीज होती है ?

तुम्हें अल्लाह ने अच्छी सेहत बख्शी है, तुम तो अगर चार निकाह और भी कर लो तो तुम्हारा क्या बिगड़ने वाला है ? तुम हमारे पुरखों को तथा पुराने बादशाहों को ही देख लो, एक-एक बादशाह के यहाँ अनेकों बीवियाँ रहती थीं, पर मजाल है कि किसी को कोई फर्क पड़ा हो, अरे इन्सान की सेहत कायम रहनी चाहिये, मैं समझता हूँ कि तुम्हारी खैरियत शहजादी से निकाह करने में ही है तथा आप इसे अल्लाह का हुक्म मान कर ही कबूल कर लें।

इस पर भी कालाचन्द के दिलो दिमाग में अपने कट्टर ब्राह्मणपन एवं वह अपने पूर्वजों के आदर्शों के बारे में

सोचता रहा और अन्त में दुखित मन से मना करने के लिहाज से सिर हिलाते हुए बोला- हुजूर ! मैं एक मामूली सा आदमी हूँ, मुझे शाही महल से क्या लेना देना है ?"

"कालाचन्द ! तुम बहुत जिद्दी हो । शहजादी तुमसे प्यार करती है और तुमसे शादी करना चाहती है । बादशाह की भी यही मन्शा है, मैं तुमसे बादशाह सलामत की ओर से बातचीत कर रहा हूँ ।"

कालाचन्द ने ना में सिर हिलाया । इस बात से उसे कोई फायदा नहीं होगा क्योंकि सारी समस्या अभी तक उसके लिए एक पहेली बनी हुई थी ।

"मेरे लिए यही अच्छा होगा कि मैं अब कुछ ना बोलूँ और आपकी इजाजत से मैं अब चलना चाहूँगा ।"

जैसे ही वह जाने के लिए घूमा उसे तालियों की आवाज सुनाई पड़ी । चारों तरफ से सैनिक निकल आए और उन्होने उसे घेर लिया ।

कालाचन्द ने घूमकर वजीर को गुस्से से देखा ।

वजीर ने धीरे से कहा- "इसे तहखाने में डाल दो ।"

जब वजीर ने सुलतान को यह सारी घटना सुनाई तो वह नाराज हो गया और उसे अपमान की भावना का अहसास हुआ ।

"आलमपनाह ! वह बेवकूफ और बहुत ही जिद्दी

इन्सान है, चन्द दिन तहखाने में रहने के बाद उसका दिमाग दुरूस्त हो जायेगा। उसकी हुक्मउदूली की आदत भी इससे ठीक हो जायेगी।"

सुलतान ने हाँ में अपना सिर हिलाया। पर वह सोचने लगा कि "मैं दुलारी से क्या कहूँ ? यह बात महत्वपूर्ण नहीं है कि वह मुसलमान बन जाये लेकिन यह बात महत्वपूर्ण है कि मेरा दामाद बनें। मान लिया जाए कि वह इसके बाद भी जिद्दी ही बना रहे, तब .... ?

"तब ! आलीजाँ, इसका इलाज मौत है, वह आपका मजाक बनाकर दुनिया में जिन्दा नहीं रह सकता।"

"मेरा मजाक क्यों बनेगा ?"

"वह और लोगों से बात करेगा और इससे बात फैलेगी। आलीजाँ, इसका इलाज सिर्फ मौत है।"

"और मौत की सजा कैसे दी जाएगी ?" सुलतान को यह सारी बातें पसन्द नहीं आ रही थीं। वह अपनी पुत्री के सामने असहाय सा हो जाता था और इस समय वह अपनी पुत्री के लिए चिन्तित था।

"काजी अब्दुल्ला खान उस पर एक अदालत में मुकदमा चलाएगा। उस पर यह इल्जाम लगाया जाएगा कि उसने बादशाह सलामत की हुक्मउदूली की है।"

"सैय्यद साहब ! मेरा कानून कठोर जरूर है लेकिन वह

अन्यायी नहीं है, आप मुझे इस अन्याय में शामिल करना चाहते हैं ?''

''आलीजाँ, मुझे और कुछ सूझ नहीं रहा है, या तो मुकदमे में उसे सजाए मौत दी जाए या फिर वह सदा-सदा के लिए तहखाने में रहे । हुजूर ! गुस्ताखी मुवाफ हो, आप समझने की कोशिश करें, हम उसे सीधे कत्ल भी तो नहीं कर सकते और हमारी मजबूरी है कि हम उसे आजाद भी नहीं कर सकते ।''

''सैयय्द साहब ! कानूनी कत्ल मामूली कत्ल से ज्यादा खराब होता है ।''

वजीर ने अपने कन्धे उचकाए, ''आलीजाँ ! मैंने हर बात सोच ली है और फौजदार को खत्म करने के लिए इससे अच्छा और कोई रास्ता नहीं है ।''

सुलतान ने गहरी सांस ली । उसे कालाचन्द पर गुस्सा आ रहा था कि उसने एक गम्भीर समस्या पैदा कर दी थी । वह ख्यालों में खोया हुआ सा लग रहा था और वजीर बेचैन लग रहा था । अन्ततः सुलतान ने सिर उठाया तो कुछ कहा नहीं केवल अपना सिर हिला दिया । वजीर ने झुक कर कोर्निश बजाई और वापस चला गया ।

अपने विवेक के बावजूद भी वजीर सुलतान को समझ नहीं पा रहा था । एक महान योद्धा, जो बिना पलक झपकाए

हजारों लोगों को मौत के घाट उतार देता था, आज वह अपनी बेटी के मामले में बहुत कमजोर सा नजर आ रहा था। सारी दुनिया उसके पैरों पर पड़ी थी लेकिन वह अपनी बेटी का गुलाम था।

यह एक विचित्र बात थी कि इतना क्रूर हृदय रखने वाला व्यक्ति अपने मन में प्यार जैसा अद्वितीय भाव भी रखता था। वजीर ने अपना सिर हिलाया। जो बात उसकी समझ में नहीं आती थी, उसे वह छोड़ देता था।

अगले दिन मुकदमें का ढोंग रचा गया। न्यायाधीश काजी अब्दुल्ला खान एक बूढ़ा व्यक्ति था जिसके पैर कबर में लटके हुए थे, जब वह किसी व्यक्ति को मौत की सजा देता था तो उसकी आंखों में उस समय एक अजीब सी चमक आ जाती थी और फिर यह तो एक फरेब भरा मुकदमा था जिसका फैसला पहले ही हो चुका था। वह अदालत में सिर्फ इसलिए बैठा हुआ था कि उसे काजी बनने की रस्म पूरी करनी थी।

अदालत सरदारों और सामन्तों से खचाखच भरी हुई थी। अदालत में सुलतान भी उपस्थित था और साथ ही वजीर भी था। कैदी एक किनारे पर सैनिकों से घिरा हुआ खड़ा था। पर दुलारी को इस बारे में कुछ भी मालूम नहीं था।

आरोप पत्र वजीर ने पढ़ा। आरोपों की सूची लम्बी थी

और ऐसा लगता था कि इन आरोपों का कोई आधार नहीं है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण आरोप यह था कि- ''कालाचन्द राय भादुरी ने बादशाह का हुक्म नहीं माना अर्थात् उसने बादशाह की हुक्मउदूली की है ।''

कालाचन्द ने कहा- ''मैंने आलीजाँ की हुक्मउदूली कभी नहीं की, लेकिन मेरे पास उनके हुक्म को ना मानने की एक वजह है, क्या काजी साहब इस वजह को जानना चाहेंगे ?''

काजी ने कालाचन्द की बात नहीं सुनी ।

इतना ही काफी है कि तुमने इस बात का इकबाल कर लिया है कि तुमने बादशाह सलामत का हुक्म नहीं माना । यह सरासर गद्दारी है और तुम्हारा फैसला तुम्हारे इसी जुर्म के आधार पर किया जा सकता है ।

कालाचन्द ने विरोध करते हुए कहा- ''जनाब काजी साहब ! यह एक जातिय मामला है, इससे सल्तनत के ओहदे का जरा भी सम्बन्ध नहीं है ।'' काजी ने उसकी तरफ घूर कर देखा ।

''इसके माने क्या यह है कि सुलतान सिर्फ उसी समय बादशाह होते हैं जब वह तख्त पर बैठे होते हैं और उस समय सुलतान बादशाह नहीं होते जब वह अपने महल में होते हैं?'' कालाचन्द ने नजरें झुका कर धीमी आवाज में उत्तर दिया- ''नहीं'' ।

"तुमने सुलतान की हुक्मउदूली की है, यह गद्दारी है, और मैं तुम्हें सजा-ए-मौत देता हूँ।"

कालाचन्द जानता था कि किसी भी प्रकार की अपील करना बेकार होगा। उसने होनी के आगे सिर झुका दिया। सुलतान हर उस व्यक्ति से इसी प्रकार छुटकारा पाता था जिसे वह पसन्द नहीं करता था उसके चेहरे पर घृणा के भाव उभर आए।

"तुम्हें चांद के तीसरे दिन मौत की सजा दी जायेगी। अगर तुम इसी बीच अपना फैसला बदल लो तो तुम्हारे मुकदमे पर फिर से गौर किया जा सकता है।"

कालाचन्द को तब तक के लिए जेलखाने में डाल दिया गया।

कालाचन्द की सजा की खबर आग की तरह फैल कर हरम में दुलारी तक भी पहुंच गई।

आतंकित गुलशन ने हांफते हांफते कहा- "शहजादी ! वे चांद के तीसरे दिन उसका सिर कलम कर देंगे।"

शहजादी के चेहरे पर अचम्भा था और उसने पूछा- "क्यों ?"

"क्योंकि, मैं समझती हूँ कि उसने आपसे निकाह करने से इन्कार कर दिया है।"

"बेवकूफ असली वजह क्या थी मैं यह जानना चाहती हूँ?"

"शहजादी ! मुझे मालूम नहीं है, काजी का कहना है कि उसने बादशाह सलामत की हुक्मउदूली की है और ऐसा करना गद्दारी है।"

दुलारी को बेचैनी होने लगी, उसे विश्वास नहीं हो रहा था।

"अब्बाजान किसी आदमी को सिर्फ इसलिए मौत की सजा क्यों देंगे कि उसने मेरे साथ शादी करने से इन्कार कर दिया ?"

"शहजादी ! मैंने सुना है कि उसे पहले मुसलमान होने के लिए कहा गया, और उसने कलमा पढ़ने से इन्कार कर दिया ?"

दुलारी के चेहरे पर मुस्कान थिरक गई।

"तब उसने मुझसे निकाह करने के लिए इन्कार नहीं किया, उसने अपना धर्म बदलने से इन्कार किया है। यह अच्छी बात है कि उसने इन्कार कर दिया, इससे मालूम होता है कि वह एक ईमानदार और चरित्रवान व्यक्ति है।"

"कनीजों ने सिर हिला कर हामी भरी, क्योंकि बादशाह की बेटी से ना करने के लिए कुछ जुर्रत से ज्यादा ही हिम्मत चाहिए।

दुलारी ने दृढ़ता के साथ कहा- "वह नहीं मरेंगे। मैं उन्हें नहीं मरने दूँगी।"

रबिया ने पूछा- "पर कैसे शहजादी ?"

"मुझे खुद भी मालूम नहीं है, लेकिन तुम लोग जाओ। मुझे अकेला छोड़ दो।"

पछतावे भरी आवाज से गुलशन ने कहा- "शहजादी अब हमें असलियत पता लग गई है। आप सचमुच में उससे मोहब्बत करती हैं। मैं उम्मीद करती हूँ कि वह आपकी वजह से जिन्दा रहेगा।"

कनीजें कमरे से बाहर चली गईं और दुलारी खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गई। उसने देखा महानन्दा बिना किसी चिन्ता के बह रही थी।

वह मन ही मन नदी से कहने लगी- "मैं तुम्हारे किनारे पर पैदा हुई हूँ, तुम मुझे ना उम्मीद नहीं कर सकतीं, तुम्हें मुझको उसे बचाने का रास्ता बताना ही होगा क्योंकि मैं उसे बेहद प्यार करती हूँ और अगर तुम मुझे रास्ता नहीं सुझाओगी, तो मेरी लाश तुम्हारी गोद में होगी।"

नदी केवल कलकल करती रही। वह खिड़की के नजदीक बहुत देर तक शान्त बैठी रही पर उसके दिलोदिमाग में तूफान उमड़ा पड़ रहा था वह अपनी कल्पना में कालाचन्द को महानन्दा में स्नान करके लौटती देख रही थी। उसका हृदय उछलने लगा। इसके बाद वह एकाएक बहुत तन गई तथा उसके मन में एक विचार कौंध गया, वह करेगी, और

ऐसा ही करेगी । उसे बचाने का सिर्फ यही एक रास्ता है । उसी विचार को मन में लिए हुए रात को उसने अपने अब्बाजान की मिन्नतें की ।

''यह मेरे बस के बाहर है, मेरी बच्ची ! '' सुलतान ने बेटी के दुख से कातर होकर असमर्थता प्रकट करते हुए कहा।

''अब्बाजान ! आप बंगाल और बिहार के सुलतान हैं और आप चाहें तो काजी का फैसला भी बदल सकते हैं अब्बाजान ! मेरी आपसे सिर्फ इतनी सी इल्तजा है कि बस ! आप उसे बचा लीजिए ।' दुलारी ने रोते हुए कहा ।

''मुझे माफ कर दो बेटी, अब बहुत देर हो चुकी है ।''

''अब्बाजान ! हुआ क्या है ? यह मुझे कोई नहीं बताता ।''

''मेरी बच्ची ! मुझे माफ कर दो, अब मैं कुछ नहीं कर सकता ।''

''वह नहीं मर सकता अब्बाजान ! मैं उसे नहीं मरने दूँगी,'' जख्मी नागिन की तरह बिफरते हुए पागलों की भाँति दुलारी ने कहा ।

बादशाह ने अपने कन्धे उचकाए, वह बहुत दुखी था । वह अपनी बेटी से बातें करते हुए डर रहा था । वह नहीं चाहता था कि कालाचन्द जीवित रहे, क्योंकि उसने उसे बहुत दिली चोट पहुंचाई थी । कालाचन्द की मौत ही सिर्फ उसकी चोट का मरहम थी । सुलतान समझता था कि दुलारी

थोड़ा रोएगी, और रो-धो कर चुप हो जायेगी । क्योंकि यह मासूम लड़की ही तो है समय तो अच्छे-अच्छों के घाव भर देता है, कुछ समय गुजरने के बाद इसके जख्म भी भर देगा ।

शहजादी ने बात आगे नहीं बढ़ाई । उसने सोच लिया था कि वह वही करेगी जिसका उसने फैसला कर लिया है वह अपने अब्बा, वजीर और काजी को ऐसा सबक सिखायेगी कि वे भी जिन्दगी भर याद रखेंगे ।

ज़ानेंद्रनाथ भादुरी शीघ्र ही टांडा पहुंच गए । वह रूपाली और रूपानी के साथ सुलतान के सामने गए । उसने बादशाह की मिन्नतें कीं, उससे कालाचन्द के जीवन की भीख मांगी, पर वह निर्दयी बादशाह नहीं पसीजा ।

दोनों औरतें बिलख-२ कर रो रही थीं किन्तु सुलतान नहीं पसीजा । फैसला हो गया था । इसके विरूद्ध कौन जा सकता था ?''

अन्त में निराश होकर ज्ञानेन्द्रनाथ ने पूछा- ''आलीजाँ ! क्या कोई रास्ता नहीं है ? आखिर कोई तो रास्ता होगा जो मेरी लड़कियों का सुहाग बना रहे ।''

''नहीं ! उसने मेरी हुक्मउदूली की है और यह गद्दारी है हर आदमी इसे जानता है कि हम कानून नहीं बदल सकते ।''

बूढ़े ज्ञानेन्द्रनाथ ने कहा- ''आलीजाँ ! मैं उसे समझाऊँगा और अपनी बात मनवा लूँगा । मेहरबानी करके मुझे बतला दें

कि उसने आपका क्या हुक्म नहीं माना ? रहम करें, आलीजाँ! मेरे बूढ़े शरीर पर, आपके रहमोकरम पर मैं कुछ दिन और जी लूंगा।

"बुजुर्गवार ! क्या तुम समझते हो कि दुनिया में सिर्फ तुम्हीं अकेले ऐसे इन्सान हो जो उसे प्यार करते हो ? मैं भी उसे प्यार करता हूँ और मेरी बेटी भी उससे बेहद प्यार करती है, फौज के सारे सिपाही उससे प्यार करते हैं, पर हुक्मउदूली तो हुक्मउदूली है और इसके माने तो सिर्फ मौत है।"

"आलीजाँ ! वह अभी बच्चा है, वह लापरवाह हो सकता है, अगर आप मुझे उससे मिलने की इजाजत दें तो मैं उसे समझा दूँगा। वह मेरी बात जरूर मान लेगा, आलीजाँ!"

"बुजुर्गवार ! अब बहुत देर हो चुकी है हम मजबूर हैं अब तुम्हें कोई इजाजत नहीं मिल सकती।"

अन्ततः बूढ़ा ज्ञानेन्द्रनाथ और कालाचन्द राय की दोनों पत्नियाँ रोती बिलखती हुई अपने घर वापस आ गई। पर यह घर अब उदासी और दुख से भर गया था। वे निराशा के सागर में गोता लगाते हुए उसकी मौत का इन्तजार कर रहे थे।

चांद के तीसरे दिन कालाचन्द को बेड़ियों से जकड़ कर पहले शाही दरबार में लाया गया। सिपाहियों ने उसे घेर रक्खा था। सुलतान एक ऊँचे तख्त पर बैठा था। उसके नजदीक खड़ा बूढ़ा वजीर धीरे-धीरे अपनी दाढ़ी सहला रहा

था । आसपास सलतनत के सरदार और अफसर तथा कुछ नागरिक खड़े हुए थे, इसी भीड़ में एक तरफ बूढ़ा ज्ञानेन्द्रनाथ भी खड़ा था । उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे और सूरत से दुख और पीड़ा झलक रही थी ।

कालाचन्द छाती फुला कर बिल्कुल सीधा खड़ा था । उसकी बाहों की मांसपेशियाँ फड़क रही थी, वह सुलतान और वजीर को अपनी खामोश नजरों से देख रहा था । सुलतान अपने तख्त पर बैठा झेंप सा रहा था । सुलतान का मन कालाचन्द की जवानी को देख कर द्रवित हो रहा था लेकिन वह निःसहाय था । कालाचन्द एक स्वाभिमानी ब्राह्मण था जबकि ब्राह्मण को दीन और शालीन होना चाहिए था ।

हर व्यक्ति उसकी जवानी पर दुखी था । उसे सभी पसन्द करते थे सभी को यह आश्चर्य हो रहा था कि उसने ऐसा कौन सा काम कर दिया है जिससे बादशाह की हुक्मउदूली अर्थात् अवज्ञा हुई है ?

काजी सामने आया और बादशाह के सामने झुका ।

उसने आडम्बरपूर्वक कहा- "आलीजाँ ! सजा की तैयारी पूरी हो चुकी है ।"

ठीक है, जल्लाद को बुलाओ ।

काजी ने पीछे घूम कर एक सिपाही की तरफ देखा ।

उसने सिपाही को इशारा किया। सिपाही बाहर चला गया और थोड़ी देर बाद एक ठिगने से स्याह रंग के ताकतवर जल्लाद के साथ वापस लौट आया।

जल्लाद ने नकाब पहन रक्खी थी वह शक्ल से एक हब्शी सा लग रहा था, उसके शरीर में मांसपेशियाँ नजर आ रही थी। उसका ऊपरी भाग नंगा था। कमर से नीचे वह तंग चूड़ीदार पाजामा पहने हुए था। उसके हाथ में एक बड़ा सा फरसा था।

हब्शी जल्लाद ने बादशाह को झुक कर सलाम किया। सलाम करने के बाद वह कालाचन्द की ओर मुँह करके खड़ा हो गया। कालाचन्द बिना पलक झपकाए निर्भीकतापूर्वक उसे घूर रहा था। जल्लाद को आश्चर्य हो रहा था कि साधारणतया मौत की सजा पाए अपराधी भयभीत रहते हैं पर यह व्यक्ति बिल्कुल निडर खड़ा था।

काजी और वजीर धीरे धीरे कालाचन्द के पास पहुंचे। फुसफुसाहट के साथ वजीर ने कहा- "क्या तुम अभी भी मुसलमान बनने से इन्कार करते हो ?"

वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति ने ठंडी सांस ली, और सभी समझ गये कि अच्छा तो इस सारी बात का कारण यह है ! बूढ़ा नाना ज्ञानेन्द्रनाथ बेहोश होकर गिर पड़ा।

कालाचन्द मुस्कुराने लगा। उसने गर्व से कहा-

"मैंन मौत पसन्द की है, फरसा उठाओ और मेरी गरदन उड़ा दो। मैंने खुद मौत को पसन्द किया है, मुसलमान बनने की जगह मैं हजार बार मरना पसन्द करूँगा ।"

जब बूढ़ा ज्ञानेन्द्रनाथ होश में आया तो उसकी नजरों में कालाचन्द के प्रति प्रशंसा के भाव थे, वह सोच रहा था कि अगर स्वयं सुलतान भी उससे यह प्रार्थना करता कि वह कालाचन्द को मुसलमान बनने के लिए तैयार करे तो वह कभी भी ऐसा नहीं करता, उसे कालाचन्द पर गर्व था।

सुलतान ने कहा- "तुमने हर बात को मुश्किल बना दिया है।"

कालाचन्द ने सुलतान की तरफ तीखी नजरों से देखा और कहा- "आलीजाँ ! यह तो बिल्कुल आसान है फरसे की एक चोट से हर बात आसान और खत्म हो जाएगी ।"

काजी और वजीर सुलतान के पास चले गए, सुलतान ने उन्हें इशारा किया।

जल्लाद ने फरसा उठाया और धार पर हाथ फेर कर उसकी तेजी देखने लगा । कालाचन्द ने निश्चिन्त होकर उसकी तरफ देखा।

सिपाही कालाचन्द के पास पहुँचा।

जल्लाद ने कहा- "मेहरबानी करके झुक जाओ ।"

कालाचन्द ने हंसते हुए कहा- "मैं कभी नहीं झुकूँगा,

जल्लाद को मेरा सिर ऐसे ही उतारना पड़ेगा।"

जल्लाद को उलझन हो रही थी। वह थोड़ा सा पीछे हटा उसने अपना फरसा उठाया और उसे चलाने के लिए फरसे की धार को अपनी पैनी नजरों से परखा, बस ! वह फरसा चलाना ही चाहता था कि-"अचानक एक निर्भीक बुलन्द आवाज आई.................. ठहरो !"

आवाज पतली पर तीखी थी, चारों ओर सन्नाटा फैल गया, फरसा हवा में ही जहां का तहां रूक गया। हर कोई यह जानने के लिए इधर उधर देखने लगा कि आखिर यह आवाज किसकी है ? काजी और वजीर हतप्रभ थे। सुलतान खड़ा हो गया उसे लगा कि यह सुरीली आवाज जानी पहचानी है।

तूफान के झोंके की तरह एक जवान लड़की सामने आई और वह कालाचन्द के सामने आकर सीधी खड़ी हो गई।

सुलतान ने खोखली आवाज में आश्चर्य से भर कर कहा-............... "दुलारी !"

किन्तु वह शान्त खड़ी थी।

उसने गुस्से से भरी आवाज में कहा- "इन्हें मारने से पहले मुझे मारना होगा।"

भीड़ के मुंह से आश्चर्य से निकला-............ "शहजादी !"

शहजादी को अब तक बहुत थोड़े से लोगों ने देखा था। वह दुलारी को नहीं पहचानते थे लेकिन उन सबको उसके लिबास से यह अनुमान हो गया था कि वह शहजादी ही है। उसकी वेशभूषा, उसकी सुन्दर काया और शाही निशानात इस बात का संकेत कर रहे थे कि वह शाही खानदान से ताल्लुक रखती है।

"दुलारी"..................... सुलतान चीख कर बोला। वह गुस्से में था कि यह लड़की कानून और उसकी अवहेलना कर रही है।

"अब्बाजान ! पहले बिना मुझे मारे इन्हें कोई नहीं मार सकता।" उसने बड़े ही दृढ़ और निर्भीक होकर यह बात कही।

वहाँ खड़े लोगों और सरदारों के बीच हलचल मच गई। सुलतान की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे ? वह भौचक्का सा नजर आ रहा था।

कालाचन्द इस लड़की के साहस को देखकर आश्चर्य चकित था। वह अपने आश्चर्य को छिपाने के लिए अपना निचला होठ काट रहा था, "तो यह है शहजादी ! बादशाह की बेटी दुलारी।" यही वह लड़की है जो इससे शादी करना चाहती थी और जिससे शादी करने के लिए

उसने इन्कार कर दिया था । उसने कल्पना की थी कि शहजादी आलसी और जिद्दी होगी । उसने कभी सोचा भी नहीं था कि शहजादी बिफरी शेरनी की तरह भी हो सकती है।

सुलतान ने फिर चीख कर कहा- "दुलारी ! वहाँ से हट जाओ ।"

दुलारी ने भी चीख कर वैसा ही जवाब दिया- "कभी नहीं हटूँगी, अब्बाजान ! मैं देखती हूँ कि किसको मुझे हाथ लगाने की हिम्मत है ? अगर किसी ने मेरे बदन को छू दिया तो फिर मैं आपकी बेटी नहीं रहूँगी ।"

सुलतान कांप रहा था । वह अपनी बेटी के पास गया । वजीर और काजी की जुबान बन्द थी क्योंकि यह शाही खानदान का मामला था और इसके बीच में न पड़ने में ही उन्होंने अपनी खैर समझी ।

यकायक कालाचन्द बोला- "अगर सुलतान मेरी पिछली गलतियों को माफ कर देंगे तो मैं उनकी बेटी से शादी कर लूँगा ।"

सुलतान चौंक पड़ा ।

"तुम शादी करोगे ?" उसने आश्चर्य से दो बार पूछा ।

"जी हाँ, आलीजाँ ! मैं शादी करूँगा ।"

"तुम मुसलमान बन जाओगे ?"

''नहीं, अब्बाजान ! मैं नहीं चाहती कि यह मुसलमान बनें। मैं इन्हें ऐसे ही चाहती हूँ जैसे ये हैं।''

''मेरी बच्ची ! तुम सचमुच हिम्मती हो,'' सुलतान ने दुर्भाव पूर्वक उसके साहस की प्रशंसा करते हुए कहा।

''अब्बाजान ! मैं आपकी बेटी हूँ।

सुलतान ने सिपाहियों की तरफ देखा और उन्हें आदेश दिया कि- ''इसे आजाद कर दो।''

सिपाहियों ने आगे बढ़कर उनके हुक्म की तामील की और कालाचन्द को जंजीरों से मुक्त कर दिया। कालाचन्द ने अपनी कलाइयों पर हाथ फेरा ताकि जंजीरों के कारण नाड़ियों में रूका हुआ खून बह सके।

उन्होंने एक दूसरे की तरफ देखा। दुलारी ने धीमें स्वर में कहा- ''आपको अपना मजहब बदल कर मुझसे शादी नहीं करनी है, मैं यह नहीं चाहती कि आप मुझ पर दया करके शादी करें''। मैं चाहती हूँ कि आप मेरे शौहर बनें--ठीक ऐसा शौहर जो प्यार, मौहब्बत और आनन्द से भरा हो - जो मुझे प्यार करे न कि मुझ पर दया करे।''

उसने धीमे से उत्तर दिया- ''दया नहीं है, शहजादी और न ही यह मौहब्बत है, हां ! इसे आप प्रशंसा कह सकती हैं, मैं आपकी हिम्मत की प्रशंसा करता हूँ।''

शाही शानो शौकत से शादी हुई । बड़े, छोटे, गरीब, अमीर सभी को शादी में दावत दी गई । सारी सल्तनत में खुशियाँ मनाई गईं । वह सुलतान की इकलौती बेटी थी इसलिए शादी मुसलमानी ढंग से की गई ।

रूपाली और रूपानी परेशान थीं । ज्ञानेन्द्रनाथ भादुरी दुख से कराह रहा था । इन्दुबाला देवी गुस्से से पागल हो रही थी । वे सब लोग शादी से पहले ही भादुरी चले गए थे । वैसे उस जमाने में बहु विवाह होना तो एक साधारण सी बात थी, लेकिन मुसलमान लड़की से शादी करना उन लोगों की दृष्टि में बहुत घृणित बात थी ।

कालाचन्द के पास उनको समझाने के लिए समय नहीं था । उसे उनके विषय में सोचने का अवसर ही नहीं मिला । जिस लड़की से उसने शादी की वह गहन अनुराग से भरी हुई युवती थी । उसने कालाचन्द पर पूर्णरूप से एकाधिकार कर लिया था । वह दिन रात उसके साथ रह कर भी नहीं ऊबता था और धीरे धीरे वह उससे प्यार करने लगा ।

कुछ समय बाद कालाचन्द को अपने रिश्तेदारों, अपनी पत्नियों और नजदीकी लोगों का ख्याल आया । वह अपनी भूल सुधारना चाहता था । उनको भूलना उसकी कठोरता थी। अब वह अपने घर भादुरी गया ।

उसे लगा कि वे लोग नाराज होकर घर छोड़ कर चले

गये हैं, उसे सब चीजें ठीक करनी होंगी।

उसने दुलारी से कहा- ''तुम्हें मालूम है कि मेरी दो बीवियाँ और भी हैं मैं उन्हें वापस लाना चाहता हूँ वे अपने वतन चली गई हैं।''

दुलारी ने कहा- ''तुम्हें हर हालत में भादुरी जाना चाहिए। यों तुम्हारी याद मुझे बहुत आएगी।''

मैं थोड़े वक्त के लिए ही जा रहा हूँ।''

चूंकि फौजदार जैसे मामूली ओहदे के व्यक्ति का सुलतान का दामाद होना सुलतान की शान के खिलाफ था इसलिए सुलतान ने उसे अपनी फौज का सेनापति बना दिया था सुलतान ने उसे भादुरी जाने की इजाजत भी दे दी थी।

लेकिन उसके वतन में तूफान सा आया हुआ था। उसके सहधर्मियों अर्थात् बिरादरी वालों ने उसका जातिय बहिष्कार कर रक्खा था। यह उसके लिए एक भयानक चोट थी तथा उसे इस बात की तनिक भी आशा नहीं थी।

मुख्य पुजारी सूर्यप्रसाद ने चीख कर कहा- ''तुमने एक मुसलमान लड़की से शादी की है, इस शादी से तुमने हमारे धर्म तथा अपने आपको दूषित किया है।''

''मैंने अपना धर्म परिवर्तन नहीं किया है। मैंने सिर्फ एक औरत से शादी की है और वह औरत भी किसी दूसरी औरत की ही तरह है, जिस परमात्मा ने दुनिया की तमाम औरतों को

पैदा किया है, उसी ने उसे भी पैदा किया है ।''

''नहीं ! वह एक मुसलमान है, वह विजातीय है और तुम.......तुम.......अब एक अधर्मी और दूषित व्यक्ति हो......''

कालाचन्द की आंखें क्रोध से लाल हो गई । उसने कहा- ''गालियाँ मत दो, शास्त्रों में गाली देने के विषय में कुछ नहीं लिखा है ।''

''तुमने जो कुछ किया है उसके समर्थन में वेद, उपनिषद और पुराणों से तर्क दोगे ? यह जानते हुए भी कि जो कुछ तुम कर रहे हो वह एक पाप है, घृणित कार्य है, फिर भी तुमने उसे जानबूझ कर किया है ।''

कालाचन्द ने चीख कर कहा- ''हाँ ! हाँ !! मैंने जो कुछ किया है जानबूझ कर किया है किन्तु उससे धर्म कैसे दूषित होता है? मैं एक बार फिर कहता हूँ कि- ''मैंने केवल एक औरत से शादी की है ।''

''म्लेच्छ कहीं के ! तुम इसे विवाह कहते हो ? हम अपने पुत्रों और पुत्रियों का विवाह कभी मुसलमानों से नहीं करते।''

अन्ततः बहस से कोई फल नहीं निकला । उन अधिकारों के लिए संघर्ष करने से क्या फायदा जिनको देने से इन्कार कर दिया जाए ? यह धर्मग्रन्थों के साथ युद्ध नहीं था, बल्कि यह कट्टरपंथियों के कुविचारों के साथ एक संघर्ष था ।

कालाचन्द का चेहरा गुस्से से तमतमा गया, उसने अपनी तलवार खींच ली, सूर्यप्रसाद और अन्य लोग भय से कंपकपाने लगे, कालाचन्द ने कहा- ''मैं तुम्हारे टुकड़े टुकड़े करके चीलों के सामने डाल सकता हूँ, लेकिन मैं ऐसा नहीं करूँगा। मैं तुम्हारे गन्दे खून से अपनी तलवार को नापाक नहीं करूँगा।''

तलवार देख कर पुजारी शान्त हो गए। वे हताश दिखलाई पड़ने लगे लेकिन वे हार मानने वाले नहीं थे।

कालाचन्द के चेहरे पर घृणा के भाव थे।

चितरंजन दत्त ने कहा- ''कालाचन्द एक रास्ता अभी भी बाकी है।'' चितरंजन दत्त पुजारियों की जमात का एक और बड़ा पण्डित था।

भृकुटी चढ़ा कर कालाचन्द ने पूछा- ''क्या ?''

''जगन्नाथ के मन्दिर में जाकर सात दिन तक उपवास करो। तुम्हें वहां भगवान जगन्नाथ के दर्शन होंगे और तुम शुद्ध हो जाओगे।''

उसने अपनी तलवार वापिस म्यान में डाल ली। उसने कन्धे उचकाए और सोचा- ''क्या वह दर्शन कर पाएगा ? क्या उपवास और प्रार्थना के बाद ये लोग उसे जाति में स्वीकार कर लेंगे ?''

''मैं जगन्नाथ जी जाऊँगा और फिर वापस आऊँगा,''

यह कह कर कालाचन्द चला गया ।

घर लौट कर उसका सामना बूढ़े नाना ज्ञानेन्द्र नाथ से हुआ ।

थके और उदास स्वर में उसने पूछा- "दादू ! क्या मैंने पाप किया है ?"

"नहीं चंदू ! तुमने पाप नहीं किया है लेकिन हम समाज से बंधे हुए हैं और समाज जो कुछ कहता है वह हमें करना चाहिए ।"

"दादू ! क्या मेरे जगन्नाथ जी जाने से काम बन जाएगा ?"

"शायद बन जाए, ये तो पंडों का कानून है ।"

"लेकिन दादू मैं अभी भी ब्राह्मण हूँ, मैंने अपना धर्म नहीं छोड़ा है ।"

"तुम्हें संभवतः पता नहीं था कि उस मुसलमान लड़की से शादी करने पर तुम्हारे ऊपर यह मुसीबत आएगी ।"

"नहीं ! मुझे यह मालूम नहीं था और अगर मालूम भी होता तो भी मैं परवाह नहीं करता । अपने लोगों की मूर्खता देखने से तो अच्छा होता कि मैं मर जाता ।"

"चंदू ! तुम कठोर हो ।"

कालाचन्द थकी थकी मुस्कुराहट से नाना की तरफ देखने लगा, मेरा जीवन दाँव पर लगा है और आप मुझे कठोर कह रहे हैं दादू ! आप क्या चाहते हैं ? मैं क्या करूँ ?

घुटनों के बल चल कर उनसे माफी माँगू ? प्रायश्चित करूँ ? क्या मैं अपने बाल नोच कर छाती पीट कर, आँसू बहाकर जोर से चीखते हुए कहूँ कि मैंने शास्त्रों के विरूद्ध कुछ नहीं बल्कि पंडों की नजर में पाप किया है ? दादू ! आप क्या राय देते हैं ? मैं क्या करूँ ?''

''चंदू ! जगन्नाथ धाम जाकर शुद्ध हो जाओ । तुम्हारे लिए प्रायश्चित का केवल एकमात्र यही रास्ता है ।''

''और मेरी पत्नियों का क्या ख्याल है ? क्या उनके लिए भी मैं अधर्मी हूँ ?''

उनकी आंखों में आंसू भरे हुए थे । वे कालाचन्द से बेहद प्यार करती थीं लेकिन धर्म की बेड़ियाँ अधिक मजबूत थीं ।

उसने गुस्से में भर कर पूछा- ''क्या तुम भी मुझसे नफरत करती हो ?''

रूपाली ने उत्तर दिया- ''नहीं, लेकिन अगर आप हमारे पास आयेंगे तो हमें भी जाति से बाहर कर दिया जायेगा ।''

''और तुम इससे डरी हुई हो ?''

रूपाली ने फिर कहा- ''नहीं ! हम आपकी दासियाँ हैं, पत्नी केवल पत्नी है और पति केवल पति है, दुनिया का कोई भी धर्म इस रिश्ते को नहीं बदल सकता ।''

''तब मैं तुम्हें भी साथ ले जाऊँगा ।''

''हम खुशी के साथ आपका अनुसरण करेंगी ।''

ज्ञानेन्द्रनाथ चीख पड़ा- ''नहीं यह सम्भव नहीं है । मैं मानता हूँ कि पत्नी का स्थान उसके पति के साथ ही है, लेकिन उन बच्चों का क्या होगा जिनका जन्म होगा ? वे बच्चे क्या होंगे- हिन्दू, मुसलमान या जातिहीन ?''

''दादू ! यह तो मूर्खतापूर्ण तर्क है ।''

''मैं मानता हूँ कि यह मूर्खतापूर्ण तर्क है, लेकिन तुम ही बताओ तुम्हारे बच्चों का क्या होगा ?''

कालाचन्द ने अपने कन्धे हिलाए, और उदास होकर उसने कहा- ''मेरे बच्चे नहीं होंगे ।''

''तब शादी की जरूरत ही क्या है ? पत्नियाँ किसलिए हैं? सिर्फ गौरव बढ़ाने के लिए या वासना की भूख मिटाने के लिए?''

अब इन्दूबाला बोली- ''अब हमें तुम्हारी वजह से इस घर का भी शुद्धिकरण करना होगा और अगर तुम इन बहुओं को स्पर्श करोगे तो दुनिया की कोई भी ताकत इन्हें इस घर के अन्दर वापस नहीं ला सकती ।''

''नानी माँ !''

तुम्हारे लिए नानी माँ मर चुकी है । तुम धर्म त्यागी हो तुम्हारे लिए इस घर में कोई जगह नहीं है ।

''नानी माँ !''

''चन्दू ! तुमने क्या कर दिया ? हमारे धर्म के नियम कठोर हैं और तुमने सारे नियम भंग कर दिए हैं ।''

''नानी माँ ! मैंने अपना धर्म नहीं छोड़ा है ।''

कालाचन्द की माँ अधिक सज्जन थी, बढ़ती हुई उमर के बावजूद भी उसमें ममता थी । "चन्दू ! तुम ईश्वर के लिए जगन्नाथ जी जाकर क्षमा- याचना करो, मुझे मालूम है सब ठीक हो जाएगा ।"

"माँ ! आपको कैसे मालूम है ?"

"बेटे ! मेरा दिल कहता है ।"

"लेकिन माँ ! उनके दिल मेरे लिए पत्थर हो चुके हैं । क्या तीर्थ करने से कुछ काम बनेगा ?"

"जरूर बनेगा बेटा ।"

"मुझे आशा है इससे काम बन जाएगा और पण्डे नरम पड़ जायेंगे । मैं केवल तुम्हारी वजह से ऐसी आशा कर रही हूँ।"

कालाचन्द ने अपने साथ आई हुई फौज को वापस भेज दिया । उसने अपने युवक तथा सुन्दर लेफ्टिनेन्ट से कहा - "मेरे ससुर सुलतान से कहना कि मैं पुरी की यात्रा पर जगन्नाथधाम चला गया हूँ, उनसे कहा कि मैं जल्द वापस लौट आऊँगा । मैं अकेला जाऊँगा । उनसे कहना मैं ऐसा ही चाहता हूँ ।"

"बहुत अच्छा, हूजुर।"

जब नूरूलहसन टांडा को लौटा तब अकेला और मित्रहीन कालाचन्द अपने लक्ष्य की ओर पुरी की लम्बी यात्रा पर रवाना हो चुका था ।

पुरी जो उत्कल (उड़ीसा) प्रान्त में स्थित है । उत्कल को आजकल उड़ीसा कहा जाता है । उड़ीसा शब्द ओद्रप्रदेश से बना है । ओद्र यहाँ के मूल निवासी थे । हजारों वर्षों से ज्ञान के उद्भव से ही उड़ीसा हिन्दुओं का तीर्थस्थल रहा है । पुराणों में इसकी महिमा का बड़ा गान है । कपिल संहिता में इसे सर्व पाप हरण देश कहा गया है ।

उड़ीसा चार महा तीर्थों में विभक्त था । यात्री वैतरणी नदी पार करते ही तीर्थ स्थल में प्रविष्ट हो गया । उसके पीछे धर्मनिरपेक्ष संसार छूट गया था और उसके आगे आशाओं से भरा पूरा संसार था जहाँ उसे मोक्ष की तैयारी करनी थी । नदी के दक्षिणवर्ती हिस्से में भगवान शिव के एक के बाद एक अनेक मन्दिर थे ।

नदी के तट पर मृत्युदेव यम का निवास स्थान था, और जैसे ही उसने नदी पार की, पुजारी ने उसके कान में वह मन्त्र फुसफुसा कर पढ़ा, जिसे उस समय पढ़ा जाता है जब हिन्दू की आत्मा शरीर छोड़ती है यह मन्त्र था–

''यमालया महाघोर तपः वैतरणी नदी ।''

नदी छोड़ते ही यात्री जाजपुर में पहुँचा । जाजपुर बलिदानों का नगर था और पार्वती का प्रियस्थल माना जाता था । यही प्रसिद्ध पार्वती क्षेत्र था । दक्षिणपूर्व में सूर्य स्थल था जिसे अर्क एवं पद्मक्षेत्र कहा जाता था । दक्षिण पश्चिम का क्षेत्र शिव को समर्पित था और इसे हरक्षेत्र कहा जाता था । इसके बाद दक्षिण में विष्णु भक्तों का क्षेत्र था । यह स्थल समस्त भारत में जगन्नाथ अर्थात् जगत के नाथ के धाम के रूप में ''पुरूषोत्तम'' क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध था ।

कालाचन्द घोड़े पर सवार था लेकिन जब वह उड़ीसा में प्रविष्ट हुआ तो उसने घोड़ा एक सराय में छोड़ दिया और उसने सराय के मालिक को घोड़े की देखभाल के लिए काफी पैसा भी दिया । वैतरणी नदी से आगे उसने सारी यात्रा पैदल ही तय की ।

वह विभिन्न क्षेत्रों को पार करके अन्त में पुरी पहुंचा । यह सागर तट पर बसा हुआ एक नगर था । नगर के मध्य में जगन्नाथ* का विशाल मन्दिर था मन्दिर के उस पार घना

---

* यहां पर प्रसाद रूप में चावल की खिचड़ी ही दी जाती है, जो छोटी-बड़ी मिट्टी की बनी हांडियों में मन्दिर परिसर में ही मिलती हैं, तथा मिट्टी के टुकड़ों (ठीकरों) पर भी प्रसाद दिया जाता है, प्रसाद ग्रहण करने के बाद उसी झूठे पात्र पर पुनः किसी दूसरे..........क्रमशः

जंगल और भयानक दलदल थी, जहाँ जंगली पशु शिकार की खोज में घूमा करते थे।

मन्दिर का स्थान ६५२X६३० फुट वर्ग क्षेत्र का था जिसके चारों ओर विशाल दीवार थी। यह दीवार ६५२ फुट लम्बी थी, ६३० फुट चौड़ी और २० फुट ऊँची थी। दीवार के अन्दर कोई १२० छोटे बड़े मन्दिर थे जिनमें से कुछ मन्दिर लक्ष्मी, सरस्वती, विमला, शीतला और अन्य देवियों के थे, सबसे बड़ा मन्दिर इन सबके बीचो-बीच भगवान जगन्नाथ जी का स्थित था। यह १९२ फुट ऊँचा था। मन्दिर के कलश में विष्णु जी का सुदर्शन चक्र तथा पताका बनी हुई थी। इस मन्दिर को श्रीमन्दिर भी कहते थे और यह चारों तरफ बने हुए बाकी मन्दिरों से ऊँची जगह पर बना हुआ था। इस ऊँची जगह को नीलगिरि कहते थे।

मन्दिर के अन्दर चार कक्ष थे। नट मन्दिर, भोग मन्दिर,

....पिछले पृष्ठ से क्रमशः....... व्यक्ति को प्रसाद दे दिया जाता है, यही हाल हांडियों का भी है, कहने का तात्पर्य यह है कि यहां झूठन को नहीं माना जाता, उसी एक मिट्टी के ठीकरे पर अनेकों लोग प्रसाद ग्रहण करते हैं, जब तक कि वह टूट न जाये। प्रत्येक प्रसाद का मूल्य उसकी मात्रा पर निर्भर करता है, उसको अगर कोई व्यक्ति घृणा की दृष्टि से देखता है तो उसे बहुत बुरा माना जाता है। मेरे प्रसाद ग्रहण न करने पर मुझे भी पण्डितों के कोप का शिकार होना पड़ा।

– लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

जगमोहन तथा गर्भगृह ।

मन्दिर के क्षेत्र में मूर्तियों का श्रंगार करने वालों, फूल वालों, पुजारियों, रसोइयों, रक्षकों, संगीतज्ञों, देवदासियों, मशालचियों, महावतों तथा शिल्पकारों की भीड़ रहा करती थी ।

नट मन्दिर में देवदासियाँ, नृत्य करतीं और संगीतज्ञ भजन गाते थे । भोग मन्दिर में भेंट और प्रसाद स्वीकार किया जाता था और खाना बांटा जाता था ।

जगमोहन मन्दिर में लोग भगवान का ध्यान करते थे ।

गर्भ मन्दिर में तीन मूर्तियाँ थीं । इनमें से एक भगवान जगन्नाथ की, दूसरी उनके भाई बलभद्र की तथा तीसरी मूर्ति उनकी बहन सुभद्रा की थी । इन मूर्तियों का श्रृंगार सोने तथा जवाहरातों से किया जाता था ।

मन्दिर के प्रांगण में मार्कण्डेय, इंद्रद्युम्न और रोहिणी कुंड जैसे अनेक पवित्र कुंड भी मौजूद थे ।

कालाचन्द ने इन कुंडों में स्नान किया और वह जगमोहन कक्ष के अन्दर बैठ गया । उसने वैष्णव भक्तों को देवताओं के ऊपर बड़े चंवरों से पंखा करते देखा । उसने घंटियों, संगीत और नृत्य करती हुई बालाओं की आवाजें सुनीं और मुस्कुराने लगा । यह देवताओं की क्रीड़ा का समय था । उसने आंखे बन्द कर लीं और साष्टांग दंडवत की मुद्रा में फर्श पर

लोट गया ।

वह सप्ताह भर अपने चारों ओर की दुनिया से बेखबर होकर साष्टांग दंडवत की इसी मुद्रा में रहा । वह जगत नियंता के ध्यान में रहा और अपनी आंकाक्षा की पूर्ति तथा मठाधीशों और पुजारियों के चंगुल से बचने की प्रार्थना करता रहा । वह मन की शान्ति के लिए भी प्रार्थना करता रहा, वह एक संकेत, दर्शन और सुख के लिए प्रार्थना करता रहा था, सात दिन के बाद उसने दंडवत की स्थिति छोड़ी । वह दुर्बल और परिश्रांत था, उसकी आंखें अन्दर धंस गईं थीं । उसके होठ सूख कर फट गए थे और चेहरा पीला पड़ गया था । वह विक्षिप्त सा लग रहा था ।

वह खड़ा हुआ और उसने तत्काल एक खंबे का सहारा ले लिया । वह इसी खम्बे के सहारे खड़ा रहा उसकी आंखों को हर चीज तैरती हुई सी दिखाई पड़ रही थी, काफी चेष्टा करने के बाद वह जब अपनी दृष्टि स्थिर कर पाया तब उसने अपने सामने पण्डितों का एक बड़ा समूह खड़ा देखा ।

उसके चेहरे पर अप्रसन्नता के भाव थे किन्तु उसे कुछ ऐसा लगा जैसे इन पण्डितों के चेहरे दुश्मनी और कठोरता से भरे हुए हैं ।

उसने गर्भगृह की ओर देखा । गर्भगृह के छोटे छोटे दरवाजे बन्द थे । वह आश्चर्यचकित सा होकर देख रहा था ।

उसने फटी हुई आवाज में पूछा- "क्या दरवाजे तुमने बन्द किये हैं ?"

मुख्य पुजारी बृजेश्वर स्वामी ने गरज कर उत्तर दिया- "हाँ ! हमने तुम्हारे बारे में सुना है कि तुम धर्मद्रोही हो तुम्हारे लिए इस मन्दिर में कोई स्थान नहीं है ।"

कालाचन्द ने विरोध करते हुए कहा- "लेकिन मैं एक ब्राह्मण हूँ ।"

"नहीं ! अब तुम ब्राह्मण नहीं रहे क्योंकि तुमने एक मुसलमान लड़की से शादी करके धर्म त्याग दिया है ।"

"कैसे ?"

"अब हमारे और तुम्हारे धर्म अलग अलग हैं, हम अपने बीच किसी भी धर्मद्रोही को नहीं रख सकते ।"

"लेकिन मैं न चाहते हुए भी तुम्हारे सामने हूँ, मैं भगवान जगन्नाथ जी के सामने आया हूँ ।"

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता । हम भगवान जगन्नाथ जी के पुजारी हैं ।"

"तुम मेरी मुक्ति की राह में रोड़ा बन रहे हो ?"

"तुम्हारे लिए कोई मुक्ति नहीं है ।"

"मुझे विश्वास है कि जगन्नाथ स्वामी मुझे मेरे प्रायश्चित में सहायता करेंगे । मेरे जैसे व्यक्ति, जिसने कोई पाप नहीं किया है, उसके लिए प्रायश्चित क्यों नहीं हो

सकता है ?"

"तुम जैसे विच्युत व्यक्ति को बचाने की दैव इच्छा नहीं है।"

अपने क्रोध पर काबू पाते हुए कालाचन्द बोला, "शास्त्रों में लिखा है कि चारों वेदों के ज्ञाता पण्डित ही नहीं बल्कि वह नीच से नीच व्यक्ति भी मुझे प्यारा है जो मुझमें श्रद्धा रखता है, उसका आदर भी वैसे ही करो जैसे मेरा आदर करते हो।" ऐसा भगवान का आदेश है।

पुजारी हंसने लगे और कालाचन्द गुस्से से लाल हो गया। वे उसे नीचा दिखाने के लिए उसका मजाक बना रहे थे। वह अभी तक अपने गुस्से पर काबू पाने के लिए अपने दांत भीच रहा था, और मन ही मन सोच रहा था कि यह मूर्ख और ढ़ोंगी पण्डित लोग उसका मजाक उड़ाने का साहस कर रहे हैं।

एक दूसरे पुजारी चतुर्भुज ने कहा- "तुम मन्दिर को दूषित कर रहे हो।"

कालाचन्द ने जोर देकर कहा- "मैं ब्राह्मण हूँ।"

तीसरे पुजारी योगराज ने कहा- "तुम कभी ब्राह्मण थे लेकिन अब तुम विजातीय और शूद्र हो।"

"तुम्हारे लिए मैं शूद्र हो सकता हूँ, ईश्वर के लिए नहीं, क्योंकि ईश्वरकृपा जाति, कुल नहीं मानती।"

बृजेश्वर स्वामी ने उत्तर दिया- "शास्त्रों के उदाहरण देने

से तुम्हारी सहायता नहीं हो सकेगी ।''

कालाचन्द का गुस्सा फूटने लगा और वह बोला- ''कौन किसे दूषित करता है ?''

''हम यहाँ तुमसे शास्त्रार्थ करने नहीं आये हैं । हम सिर्फ यह चाहते हैं कि तुम यहाँ से चले जाओ और अगर तुम यहाँ रूकने की जिद्द करोगे तो हम शक्ति का प्रयोग करेंगे ।''

कालाचन्द को चक्कर आ गया । उसने खम्बे का सहारा और अधिक ले लिया । उसका चेहरा रक्तिम हो गया । गुस्से से उसका खून खौलने लगा और वह पुजारियों को घूरने लगा।

''तुमने मेरे लिए दरवाजे बन्द कर दिये । तुमने मेरे लिये देवताओं के दरवाजों पर ताले डाल दिये, ठीक है ! सुबह चला जाऊँगा ।'' कालाचन्द घृणायुक्त क्रोध से भरे धीमे धीमे स्वरों में बोला ।

अब वह बिल्कुल सीधा खड़ा था । हाँ ! बीच बीच में वह काँप जरूर रहा था, लेकिन उसका व्यक्तित्व दर्शनीय लग रहा था । उसकी आंखों से घृणामिश्रित क्रोध की ज्वालाएं फूट रही थीं, वह अन्तर्मन से उन पण्डितों के समूह को बड़े ही घृणास्पद शब्दों में कह रहा था-

''मैं जाऊँगा, लेकिन मैं फिर वापस आऊँगा । मैं बात करने और शान्ति के लिए नहीं बल्कि आग और तलवार के साथ वापस आऊँगा, मैं इस मन्दिर को नेस्तनाबूद अर्थात्

तहस-नहस कर दूँगा।"

पण्डित तिरस्कार से उस पर हंस रहे थे।

पण्डित मजाक बनाते हुए बोले- "मुसलमानों के प्रेमी, कहीं और जाकर गप्प हांको।"

उसे उनके व्यंग की चुभन का अनुभव हुआ और वह एक क्षण के लिए कांप उठा, फिर वह चलने लगा। लेकिन उन पण्डितों की हंसी उसका पीछा हर जगह करने लगी।

वह फिर कभी अपने जन्म स्थान भदुरिया नहीं गया। क्योंकि वहाँ जाकर अपने लोगों से क्या कहेगा कि उसे अस्वीकार कर दिया गया है ? शायद वहाँ पहुँचने तक उन्हें यह सब मालूम हो जाये जैसे पुरी के पुजारियों को मालूम हो गया था। खबरें बड़ी तेजी से फैलती हैं और विशेष कर बुरी खबरें।

हाँ ! यह हो सकता है ब्राह्मणों द्वारा उसकी बेइज्जती करने का यह एक षड्यन्त्र रहा हो। उसने अपना घोड़ा लिया और टांडा वापस हो गया।

टांडा में वह क्रोध से भरा हुआ था।

उसने दुलारी से बड़े ही करूण शब्दों में दुखित मन से कहा- "दुलारी ! उन्होंने मुझे बाहर फैंक दिया। वे कहते हैं मैं विधर्मी हूँ। मैं जिस चीज को छू लूँगा वह दूषित हो जायेगी। यह मैं हूँ "जो न हिन्दू रहा और न मुसलमान" ! उन्होंने

मुझे दो तीन नाम दे दिये हैं। दुलारी ! मैं अब कालाचन्द राय भादुरी नहीं रहा बल्कि एक "धर्मच्युत", "अधर्मी", "गद्दार" और न जाने क्या क्या हूँ !" कहते-कहते कालाचन्द रो पड़ा।

दुलारी ने उसे सांत्वना देने की कोशिश की। इस घटना से वह बहुत दुखी थी क्योंकि कालाचन्द इससे चोट खाये हुए था। उसे इस बात का भान भी नहीं था कि बात इस हद तक पहुँच सकती है। वह उसे पागलपन की हद तक प्यार करती थी। वह चाहती थी कि कालाचन्द सुखी और प्रसन्न रहे।

दुलारी ने कहा- "उन्हें समय दो ताकि वे सब भूल जायें। एक दो साल में सब ठीक हो जाएगा, आप चिन्ता न करें।"

उसने थके हुए स्वर में कहा- "दुलारी ! तुम हमारे इन लोगों को नहीं जानती हो ! ये पुजारी लोग बहुत घातक होते हैं, तुम पत्थरों को गला सकती हो लेकिन इन पुजारियों के व्यवहार में परिवर्तन नहीं ला सकती। मैं सर्वोच्च जाति का सदस्य था और आज मेरी कोई जाति नहीं है, मैं म्लेच्छ हूँ, हाँ ! सिर्फ एक म्लेच्छ !!"

दुलारी ने अपनी हथेलियों से उसका मुंह बन्द कर दिया।

"ऐसी बात मत कहिए, मेरे आका ! आप निरर्थक ही दीन बन रहे हैं मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप धैर्य

रक्खें, सब कुछ ठीक हो जाएगा।"

उसने अपना सिर हिलाया। वह दुलारी को कैसे समझाये कि अब कभी कुछ ठीक नहीं होगा।

उसने सुलतान से भेंट की, और सुलतान ने सहानुभूति पूर्वक कहा- "कालाचन्द मैंने तुम्हारी समस्या के विषय में सुन लिया है।"

"आलीजाँ ! मेरा अपमान किया गया, मुझे लज्जित किया गया और मेरे साथ गाली गलौच तक की गई। मैंने ऐसा अपमान अपनी जिन्दगी में कभी नहीं सहा। उनके व्यंग्यों ने मुझे चाबुक से लगाए। इसका बदला जरूर लिया जायेगा।

"ऐसी साधारण सी बात के लिए तुम बदला लोगे, कालाचन्द ?" मैं जानता हूँ कि तुम्हें चोट लगी है परन्तु समय तुम्हारे घाव भर देगा।"

"ऐसा कभी नहीं होगा, आलीजाँ ! मैं आपका एक अनुग्रह चाहता हूँ ?"

कालाचन्द ! हम बिना कुछ जाने ही तुमसे वादा करते हैं कि तुम जो चाहते हो वह हम तुम्हें जरूर देंगे, पर तुम चाहते क्या हो ? यह तो बताओ।

"मैं मुसलमान होना चाहता हूँ।"

"क्यों ?" सुलतान को आश्चर्य हुआ। वह अपने दामाद

को दिलोजाँ से प्यार करता था और उसके लिए अब धर्म का कोई ज्यादा महत्व नहीं था । अब वह धीरे धीरे इस देश को समझने लगा था और उसे हिन्दू धर्म की अच्छाइयाँ भी ज्ञात होने लगी थीं ।

''आलीजाँ ! मेहरबानी करें, मैं मुसलमान बनूँगा । मुझे धर्म परिवर्तन में सहायता करें ।''

''तुमने दुलारी की सलाह ले ली है ?''

''नहीं ! मुझे हर बात में औरत की सलाह नहीं चाहिए । क्या आप मेरी मदद करेंगे, आलीजाँ ?''

''कोई भी मुसलमान किसी भी व्यक्ति को कलमा पढवा कर मुसलमान बना सकता है, लेकिन मैं काजी अताउल्ला खाँ को बुलवा लेता हूँ । क्या इससे संतुष्ट हो ?''

''मैं मुसलमान बनना चाहता हूँ और मैं स्वेच्छा से ऐसा चाहता हूँ । क्या आप इस सबसे परेशान हैं ?''

''हाँ ! एक तरह से मैं परेशान हूँ । तुम्हारी शादी के बाद मैंने कभी इस विषय में नहीं सोचा था और अब यह इतना महत्त्वपूर्ण है भी नहीं ।''

''लेकिन आलीजाँ ! अब यह मेरी जिन्दगी की सबसे अहम बात है ।''

''ठीक है, तुम्हारी ख्वाहिश पूरी हो जाएगी ।''

काजी अताउल्ला खाँ उत्तेजित था । वजीर भी उत्तेजित

था । मुसलमान सामंतों और दरबारियों के बीच कालाचन्द का धर्म परिवर्तन आरम्भ हुआ । धर्म परिवर्तन की प्रक्रिया साधारण सी थी । सबसे पहले कालाचन्द का "खतना" किया गया । खून रूकने के बाद कालाचन्द ने स्नान किया । इसके बाद वह काजी के सामने बैठा । उन दोनों के बीच पवित्र कुरान की (खुदायी) किताब रक्खी हुई थी ।

काजी ने पूछा- "तुम मुसलमान बनना चाहते हो ?"

कालाचन्द ने उत्तर दिया- "हाँ"

"ठीक है तुम धीरे धीरे मेरे बाद कलमे के हर लफ्ज (शब्द) को मेरे साथ दोहराओगे ।"

कालाचन्द ने सहमति से सिर हिलाया ।

"ला इलाह इल्लिल्लाह-मोहम्मद रसूल अल्लाह"

कालाचन्द ने तीन बार कलमा पढ़ा, इसके मायने हैं कि तुम विश्वास करते हो कि- "अल्लाह केवल एक है उसके अलावा और कोई अल्लाह नहीं है और मोहम्मद उसके पैगम्बर अर्थात् रसूल हैं" काजी ने व्याख्या की । कालाचन्द ने सहमति में सिर हिलाया ।

"क्या तुम अपना नाम बदलना चाहते हो ?"

"हाँ"

"कोई खास नाम तुम्हें पसन्द है ?"

"नहीं, लेकिन अगर नाम बदलना ही है तो मैं चाहूँगा.....

.... एक क्षण के लिए कालाचन्द रूका और बोला- ''मुझे भविष्य में ''मोहम्मद फर्मूली'' कहा जाए।''

''ठीक है, आज से तुम्हें सिर्फ इसी नाम से जाना जाएगा। अब तुम नमाज पढ़ना सीखोगे । तुम मक्का की ओर मुंह करके दिन में पांच बार नमाज पढ़ोगे ।

पहली नमाज तुम सुबह पढ़ोगे, इसे फजल की नमाज कहते हैं । इसके बाद तुम जुहर, असर, फिर मगरिब और रात में इशा की नमाज पढ़ोगे । अब तुम एक मुसलमान हो ।''

कालाचन्द जिस कालीन पर बैठा था, उससे उठा और उसने झुक कर काजी को फर्शी सलाम किया । इसके बाद वह सुलतान की तरफ मुड़ा और झुक कर उसने सुलतान को भी सलाम किया ।

सुलतान ने खड़े होकर उसे गले लगाया ।

कालाचन्द ! ''तुमने अपने लिए बढ़िया नाम छांटा । मुझे विश्वास है कि तुम एक अच्छे मुसलमान सिद्ध होवोगे,'' सुलतान ने कहा ।

''शुक्रिया ! आलीजाँ शुक्रिया !! मुझे आपकी दुआओं की आवश्यकता है ।''

लेकिन जब उसकी मुलाकात दुलारी से हुई तो वह गुस्से से फट पड़ी । दुलारी ने कहा- ''आप पागल हैं ! आपको धर्म परिर्वतन की क्या आवश्यकता थी ?''

दुलारी ! मैं किसी का होना चाहता था । जब हिन्दुओं ने मुझे अस्वीकार कर दिया तब मुसलमानों ने मुझे शरण दी और नैतिक समर्थन दिया । अब मैं किसी एक समाज का अंग हूँ ।''

''मेरे मालिक ! मेरे जिगर के टुकड़े !! तुम नहीं समझोगे, मैं तुम्हे किस कदर प्यार करती हूँ ? जिन्दगी में एक अच्छा मुसलमान बनना बहुत मुश्किल है ।'' दुलारी ने मौहब्बत भरी दृष्टि से निहारते हुए कहा ।

''मैंने अभी धर्म परिवर्तन किया है, दुलारी ! मुझे यह सब सिद्ध करने के लिए समय दो, मैं कोशिश करूँगा कि मैं एक अच्छा मुसलमान बन सकूँ ।''

''मेरे ख्याल से किसी समाज से सम्बन्धित होने के बहाने इसके अलावा भी आपके धर्म परिवर्तन के पीछे जरूर कोई उद्‌देश्य छुपा हुआ है । मैं जानना चाहती हूँ मेरे मालिक ! आखिर वह उद्‌देश्य क्या है ?''

''कुछ भी तो नहीं दुलारी । तुम व्यर्थ ही ऐसी वैसी मिथ्या कल्पना कर रही हो ।''

''मेरे मालिक ! मैं औरत हूँ और मेरी अन्तर्रात्मा कह रही है कि इस धर्म परिवर्तन के पीछे जरूर कोई दुराग्रह अवश्य छिपा हुआ है । आप अपने सहधर्मियों से बदला लेना चाहते हैं ?''

''तुम बहुत अधिक सवाल करती हो दुलारी, और इनमें

से कुछ सवाल बेहूदा और फूहड़ हो सकते हैं ?''

''आप रहस्यमय बनते जा रहे हैं । मैं आपकी बीवी हूँ । क्या मुझसे भी दुराव व छिपाव करेंगे ?''

''तुम बे वजह परेशान कर रही हो । दुलारी ! मैं अब सिर्फ एक मुसलमान हूँ और मुझे हर हालत में एक अच्छा मुसलमान बनना चाहिए । मुझे नमाज और कुरान पढ़ना सीखना चाहिए और इस काम में तुम मेरी सहायता करोगी ।''

उसने कातर आंखों से कालाचन्द की ओर देखा । ''मेरे मालिक ! मैं जरूर मदद करूँगी पर मैं भयभीत हूँ ।''

भादुरिया में कालाचन्द के धर्म परिवर्तन की खबर सुनी तो ज्ञानेन्द्रनाथ दुख से पछाड़ खाने लगे । कालाचन्द की पत्नियाँ छाती पीट पीट कर विधवाओं की तरह विलाप करने लगीं ।

इन्दुबाला देवी विरक्ति और व्यंग्य से भर कर काशी चली गई और वहाँ से वह फिर कभी वापस नहीं आई ।

वन्दना देवी इस चोट को सह न पाई और आखिर अल्लाह को प्यारी हो गयी ।

सारी गृहस्थी शमसान सी हो गई थी, कालाचन्द जिन्दगी के एक ऐसे कगार पर पहुँच गया था जहाँ से वापिस लौटा नहीं जा सकता था और यही हालत इस सारी गृहस्थी की भी हो गई थी ।

ज्ञानेन्द्रनाथ ने कहा- ''वह हमारे लिए मर गया है । मैं इस दिन को देखने की बजाय मर जाना अधिक बेहतर समझता था ।'' वह अपने हाथों की तरफ देख कर कहने लगा -''मैंने इन्ही हाथों से उसे पालापोसा था'' और उसकी आंखें भर आईं । ''ये गंदे, पापी और बेशर्म हाथ हैं, मैं इन्हें काट कर फेंक दूँगा'' । रूपाली और रूपानी दौड़ कर उसकी बाहों में समा गईं । ''अगर आप मर गए तो हमारी देख रेख कौन करेगा, दादू ? हम सती भी नहीं हो सकतीं, क्योंकि वह जिन्दा हैं और हम उनके पास भी नहीं जा सकतीं क्योंकि इसका निषेध है।''

वृद्ध ज्ञानेन्द्रनाथ कराहने लगा, और अपने द्रवित हृदय तथा घृणा से भरे शब्दों में उसने श्राप दिया -

''कमीन पण्डों ! तुम्हारी ही वजह से हमारा पुत्र आज हमसे विमुख हुआ है । ईश्वर मुझे क्षमा करे मैं अपने सम्प्रदाय से नाता तोड़ लूँगा । उसने अपने गले में पड़े जनेऊ को एक झटके से तोड़ कर दूर फेंक दिया और फिर वह बेसुध होकर पछाड़ खाकर जमीन पर औन्धे मुँह गिर पड़ा'' ।

(५)

मोहम्मद फर्मूली ने सुलतान काराटनी से कहा- ''आलीजाँ ! मैं लम्बे अर्से से बेकार बैठा हूँ, मुझे कुछ करने की आवश्यकता है किसी हमले या कुछ फतह के बारे में आपकी क्या सलाह है ?''

सुलतान ने सिर हिला कर कहा- ''मोहम्मद फतह करने के लिए क्या है ?''

''उत्कल !''

सुलतान बोला- ''यह असंभव है । उत्कल का राजा मुझे दो बार पराजित कर चुका है, वह बहुत मजबूत है । नहीं इसकी कोशिश मत करो ।''

''आलीजाँ, कोशिश करने में कोई नुकसान नहीं है, आप मुझे फौज दें दे और मैं उसके विरूद्ध अपने युद्ध कौशल की परीक्षा करूँगा ।'' ऐसा लगा कि सुलतान अपने विचारों में खो गया है ।

''मोहम्मद अगर तुम जिद्द करते हो तो कोशिश कर

देखो, लेकिन बाद में शिकायत मत करना कि मैंने आगाह नहीं किया था ।"

मोहम्मद फर्मूली हंस पड़ा, "एक बार फिर लड़ाई में जाना अच्छा है लेकिन शब्दों के साथ नहीं, बल्कि तलवार के साथ ।" इतना कहकर उसने सुलतान से विदा ली ।

राजा मुकुंददेव अपनी राजधानी "जाजपुर" से पूरे उत्कल पर शासन करता था । वह बूढ़ा जरूर हो रहा था लेकिन उसके बाजुओं की शक्ति और आंखों की चमक कम नहीं हुई थी । उसने हमले की बात सुनी और कंधे उचका दिए।

उसने अपने दरबारियों और मंत्रियों से कहा- "सुलेमान कारारनी अपनी पराजयों से संतुष्ट नहीं हुआ है और अब वह अपने बदले एक नौसिखिए मोहम्मद फर्मूली को लड़ने भेज रहा है, इस छोकरे को सबक सिखलाया जाएगा, उसे आने तो दो ।"

प्रधानमंत्री विश्वनाथ दास ने कहा- "महाराज ! मोहम्मद फर्मूली एक जमाने में हिन्दू था ।"

"विश्वनाथ ! अपने धर्म से द्रोह करने वाले का भला नहीं हो सकता है, हम उसे पराजित करेंगे और इस बार उसे समाप्त भी कर देंगे । हर बार हम मुसलमानों को छोड़ देते हैं और वे फिर वापस आ जाते हैं जिसका नतीजा है कि वे हमारे लिए एक मुसीबत बन गए हैं ।"

प्रधानमंत्री के पुत्र रामचन्द्रदेव ने कहा- "तब महाराज, हमें एक विशाल सेना अवश्य एकत्र करनी चाहिए।"

"रामचन्द्र ! शायद साम्राज्य की रक्षा के लिए तुम्हें शीघ्र ही युद्ध का आनन्द प्राप्त होगा।"

जब मोहम्मद फर्मूली उत्कल (उड़ीसा) की सीमा पर पहुँचा तो उसे मालूम हुआ कि उसका सामना एक अजेय शत्रु से है।

जाजपुर में एक भयानक युद्ध हुआ। मोहम्मद फर्मूली दीवानों की तरह लड़ा। हिन्दू सेनाएं भी बहादुरी से लड़ी पर एक प्रतिशोध से भरे धर्म परिवर्तित व्यक्ति के साथ उनकी कोई बराबरी नहीं थी।

राजा मुकुंददेव युद्ध स्थल पर हर जगह पहुँच रहा था। उसकी तलवार साक्षात मौत बनकर शत्रुओं का संहार कर रही थी। वह मुसलमानों का संहार कर रहा था जो भी शत्रु उसके सामने पड़ रहा था उसे वह तत्काल मौत के घाट उतार रहा था।

दूसरी ओर मोहम्मद फर्मूली ने हिन्दू सेना के समक्ष आतंक का रूप धर लिया था जो भी शत्रु उसके रास्ते में आया उसको उसकी तलवार ने समाप्त कर दिया और लड़ते लड़ते आखिर राजा मुकुंददेव और मोहम्मद फर्मूली आमने सामने आ ही गए।

''यह अप्रत्याशित भेंट थी दोनों लहूलुहान थे, उन्होने एक दूसरे को देखा । द्वंद काफी कठिन तथा लम्बा था मोहम्मद फर्मूली बूढ़े की दृढ़ता और शक्ति से आश्चर्यचकित था, लेकिन फिर भी जवान आदमी शक्तिशाली सिद्ध हुआ । आखिर नतीजा यह निकला कि वृद्ध मुकुंददेव जमीन पर गिर पड़ा और उसका सिर धड़ से उतार लिया गया । मोहम्मद फर्मूली ने पास खड़े एक सिपाही का भाला छीन कर उसके अग्रभाग अर्थात् फलके में मुकुंददेव का सिर लगा कर हवा में लहरा दिया ।

चारों ओर शोर मचा- ''राजा मुकुंददेव मारे गए,'' बस ! फिर क्या था ? हिन्दू सैनिकों में घबराहट और खलबली फैल गई, उन्होंने हथियार डाल दिए और वे भागने लगे, यह हिन्दू सेना की पूर्ण पराजय थी ।

जो काम सुलतान काररनी जिन्दगी भर नहीं कर पाया था उसे मोहम्मद फर्मूली ने मात्र एक झटके में पूरा कर डाला और उड़ीसा आखिर एक अफगानी शासक के अंतर्गत आ ही गया । जाजपुर पर्वतीय क्षेत्र के लिए प्रसिद्ध था । मोहम्मद क्षमा करने की मन:स्थिति में नहीं था, उसने मन्दिरों को नष्ट भ्रष्ट कर दिया, यह तो केवल शुरूआत थी, उसने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि अधिक से अधिक हिन्दुओं का धर्मपरिवर्तन करो और जो धर्म परिवर्तन को तैयार न हो उसे

तत्काल मौत के घाट उतार दो ।

नूरूलहसन उसके पास पहुँचा ।

उसने पूछा- ''हुजूर ! क्या हम वापसी के लिए कूच करें?''

''नहीं, हम अब पुरी की तरफ कूच करेंगे, वहाँ जगन्नाथ का एक मन्दिर है इस मन्दिर को नष्ट करना आवश्यक है । वहाँ के हर पुजारी पर इतना अत्याचार किया जाए कि उनकी मौत भी काँप उठे ।''

''जी हुजूर ! आदेश से नुरूलहसन कुछ उलझ सा गया था।

''नूरूलहसन ! यह मेरा हुक्म है ।'' सरदार ने निर्भीक शब्दों में कहा ।

जी हाँ, हुजूरेआला !''

विजयी मुस्लिम सेना ने पुरी की ओर कूच कर दिया, पुरी के लोग उड़ीसा नरेश मुकुन्ददेव की पराजय का समाचार सुन चुके थे पर उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि मुसलमानों की सेना उनके नगर में क्या करने आ रही है ? बाहरी व्यक्तियों के लिए पुरी में कोई विशेष आकर्षण नहीं था, यह केवल मात्र हिन्दुओं का ही एक तीर्थ स्थल था ।

जब मोहम्मद फर्मूली मन्दिर के सम्मुख खड़ा हुआ तब वह एक भेड़िए की तरह क्रूर हंसी हंस रहा था । उसकी आंखों में ठीक वैसी ही चमक मौजूद थी जैसी अपने शिकार

को देख कर किसी हिंसक जानवर की आंखों में आ जाती है।

उसने नूरूलहसन को आदेश दिया- ''पुजारियों को कत्ल न किया जाए, और अन्य जो भी आदमी सामने पड़े उसे कत्ल कर दो । मन्दिर को नष्ट भृष्ट कर दो ।''

नूरूलहसन और उसके सैनिकों ने आदेश का विधिवत् पालन किया । पुजारियों को कैद करके जानवरों की तरह हांका गया, दरवाजे तोड़ कर मूर्ति तहस नहस कर दी गई, नर्तकियों के साथ बलात्कार किया गया और अन्त में उन्हें मार डाला गया । वहाँ काम करने वाले हर व्यक्ति को, प्रत्येक यात्री को, जो कि पूजा करने आया था, उसे मौत के घाट उतार दिया गया । खूनखराबे के बाद मन्दिर में आग लगा दी गई ।

नूरूल हसन ने सूचना दी- ''हुजूरेआला ! हर आदमी ने धर्म परिवर्तन करने से इन्कार कर दिया है ।''

''तुमने उन्हें कत्ल कर दिया ?''

''जी हाँ, हुजूरेआला ।''

''बहुत खूब ! पुजारी कहाँ हैं ?''

उसे उस जगह ले जाया गया जहाँ पुजारी इकट्ठे किये गये थे । वह उनके सामने खड़ा होकर हंसने लगा ।

उसने बृजेश्वर स्वामी से पूछा-''तुम मुझे पहचानते हो?''

''तुम्हारा चेहरा जाना पहचाना सा लगता है ।''

"मैं वर्षों पहले कभी यहाँ आया था, मैं वही एक भ्रष्ट, धर्मद्रोही और मुसलमान प्रेमी हूँ।"

"कालाचन्द राय ?" का......लाचन्द राय......तुम ? कहते हुए बृजेश्वर स्वामी की घिघ्घी बन्ध गई।

"हाँ ! मैं कभी कालाचन्द राय था बृजेश्वर, परन्तु अब मैं मोहम्मद फर्मूली हूँ। मैंने वायदा किया था कि- "मैं वापस आऊँगा और मैं आ गया हूँ।"

बृजेश्वर स्वामी ने कहा- "तुमने मन्दिर को नष्ट कर दिया है, भगवान जगन्नाथ तुम्हें कभी माफ नहीं करेंगे, वह तुम्हारा नाश कर देंगे।"

"बहुत अच्छे ! जो मुक्ति प्रदान नहीं कर सकता, वह कभी नष्ट भी नहीं कर सकता। बुजेश्वर ! अब तुम मेरी घृणा देखोगे, तुमने मेरा मजाक उड़ाया था और अब मैं उसका बदला लूँगा, तुम्हारा भगवान जगन्नाथ अब मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

उसने नूरूल हसन की तरफ देखा। वह उसकी तरफ आया।

"हुजूरेआला ?"

"सैनिकों से कहो कि गड्ढे खोदें जायें और इन पुजारियों को जिन्दा ही गले तक उनमें गाड़ दें।"

उसने आसमान की तरफ देखा, सूरज गरमी के साथ

चमक रहा था । "मैं तुम्हें जगन्नाथ की दया पर छोड़ रहा हूँ, अब देखता हूँ तुम्हारा जगन्नाथ तुम्हारी कहां तक रक्षा करता है ?"

जब पुजारियों को गरदन तक जमीन में गाड़ दिया गया तब अट्टहास करते हुए मोहम्मद फर्मूली ने कहा- "मैं तब तक पुरी नहीं छोड़ूँगा जब तक तुम में से हर पुजारी दया, पानी और जीवन की भीख न मांगने लगे ।"

पुजारी जिद्दी थे । उन्होंने कष्ट सहा । लेकिन सूरज आग फैंक रहा था और उन्हें तपा रहा था । उनके होठ फट गए और गला प्यास से सूख गया उनकी चमड़ी गरमी से लाल हो कर फटने सी लगी ।

रात ठंडी थी और हवा तेज चल रही थी, समुद्र गरज गरज कर किनारों पर लहरों के थपेड़े मार रहा था और उन पर ठंडी फुहारें छोड़ रहा था, पुजारी भूखे प्यासे थे और मरणासन्न अवस्था में पहुंच गए थे । फिर भी वे सहते रहे । अगले दिन फिर सूर्योदय हुआ और वे गरमी से झुलसने लगे । उनके होठ और अधिक फट गए, जीभ सूख कर मुंह के बाहर लटक गई । उनकी आंखों की चमक समाप्त हो गई और उन्हें हर चीज धुंधली सी नजर आने लगीं उन्होंने जीवन में कभी कष्ट देखा भी नहीं था और यह भयानक यंत्रणा थी, जिससे उनकी अक्ल जवाब दे गई । वे दया की भीख माँगने

लगे, पानी के लिए चिल्लाने लगे, लेकिन उनकी आवाज फटी फटी सी हो गई थी । मोहम्मद अट्टहास करने लगा और नूरूल हसन इस नजारे को देखकर कांप गया ।

मोहम्मद ने आदेश दिया- "इनकी आंखें निकाल लो ।"

"जी हुजूरे आला ?" नूरूल हसन हक्का बक्का सा खड़ा रह गया ।

"इनकी आंखें निकलवाओ, बेवकूफ............मोहम्मद ने चीख कर हुक्म को दोबारा दोहराया ।

आदेश का पालन हुआ, पुजारियों की आंखों से खून बहने लगा, जो कि सूरज की गरमी से जल्दी ही सूख गया ।

वह अगले दिन का इन्तजार करता रहा । बृजेश्वर के अलावा बाकी सारे पुजारी मर गए थे । बृजेश्वर की मौत सबके बाद, मोहम्मद के अट्टहास सुनते सुनते हुई, बृजेश्वर को लग रहा था कि यह मोहम्मद की हंसी नहीं बल्कि नगाड़ों की आवाज सुन रहा है ।

पुरी के इतिहास में ऐसी दर्दनाक, दिल को दहला देने वाली घटना पहले कभी नहीं घटी थी । मन्दिर खून से लाल हो गया था, मन्दिर को बिलकुल नष्ट कर दिया गया था । इसके बाद मोहम्मद ने लाशों और मन्दिरों के खंडहरों, मूर्तियों के अवशेषों पर खड़े होकर एक भयानक कसम खाई ।

"यहाँ मौजूद हर आदमी मेरी बात सुने, यह मेरी कसम है

कि मैं इस धरती से हिन्दू धर्म को मिटा दूँगा और हर मन्दिर को नष्ट कर दूँगा, हर बुत (मूर्ति) को तोड़ दूँगा और हर उस हिन्दू को मरवा दूँगा जो मुसलमान बनने से इन्कार करेगा।"

उसकी कसम सुनकर सैनिक कांप उठे।

उसने अपना शाही लिबास उतार कर उसकी जगह काले वस्त्र पहन लिए। यह मौत का लिबास होगा, यह घृणा का लबादा होगा लोग उसे देखते ही जान जायेंगे कि उनके घरों में मौत आ गई है, उन्हें मालूम हो जाएगा कि मौत घोड़े पर सवार है और उनके साथ रहती है।

जब वह घर वापस पहुँचा तो सुलतान ने उसे गले लगा कर कहा- "मोहम्मद ! मुझे तुम पर नाज है। तुमने वह कर दिखाया जो कोई भी मुसलमान बादशाह नहीं कर सकेगा। यह मेरे जीवन की सबसे शानदार फतह है। मैं अब सुकून से मर सकूँगा। तुम्हारी जीत की एवज में मैं तुम्हें जो भी मुआवजा दूँगा वह कम ही होगा।"

"आलीजाँ ! आपने मुझे जो भेंट दी है वह सबसे बड़ी और अनमोल है, और वह भेंट है "दुलारी", आपकी चहेती बेटी।"

"तुम उसे प्यार करते हो न ?"

"हाँ ! आलीजाँ, वह अब मेरी जिंदगी का एक हिस्सा है। अब आप जो भी देंगे उसका स्थान दुलारी के बाद होगा।"

सुलतान ने उसका कंधा थपथपाकर कहा- ''मेरे दो बेटे हैं और तुम तीसरे हो, अब मुझे अपने बेटों पर और अधिक नाज है ।''

''आलीजाँ ! अभी और विजय बाकी है । आप मुझे आज्ञा दें कि मैं हिन्दुस्तान को झुका कर आपके कदमों में डाल दूँ ।''

''ठीक ! मोहम्मद तुम हर उस चीज पर फतह हासिल करो जिस पर कर सकते हो, मेरे गौरव के लिए नहीं, बल्कि अपने लिए, जो कुछ तुम जीत लोगे वह तुम्हारा होगा । मुझे और अधिक दौलत की जरूरत नहीं है, मेरे पास सारी दुनिया की दौलत है, मेरी बेटी है, बेटे हैं और एक बड़ी सलतनत है। मैं तुमसे सिर्फ एक चीज चाहता हूँ.................मैं एक नाती चाहता हूँ ।''

''आलीजाँ ! आपको नाती मिल जाएगा, मैं आपसे एक वादा करता हूँ कि एक अच्छा मुसलमान बच्चा आपको दूँगा।''

कुछ दिन बाद वह भदुरिया की ओर कूच कर गया । यह बंगाल के उत्तर में स्थित एक छोटा सा राज्य था । इसके शासक राजा समरजीत भादुरी एक दयालु और कमजोर किस्म के व्यक्ति थे । उनके नाम का अर्थ युद्ध विजेता था लेकिन वह योद्धा नहीं थे । वह आक्रमण को रोकने के लिए

रास्ते ढूंढने लगे ।

पुजारी लोग, जिनमें मुख्य पुजारी सूर्यप्रसाद भी शामिल था कांपने लगे । उन्होंने पुरी के पुजारियों की नियति के विषय में सुन लिया था और उन्हें अपनी नियति भी वैसी ही नजर आ रही थी । वे भयभीत थे । वे इकट्ठे होकर ज्ञानेन्द्रनाथ के पास गए ।

सूर्यप्रसाद ने कहा- "ज्ञानेन्द्रनाथ ! तुम्हें हर हालत में हमारी सहायता करनी ही चाहिए, तुम्हें उससे मिलकर उसे रोकना चाहिए ।"

ज्ञानेन्द्रनाथ ने घृणा से उनकी तरफ देखा, उन्हें प्रताड़ित करते हुए उसने कहा- "इस सबका कारण तुम हो, सिर्फ तुम! अगर तुम तब सहानुभूति पूर्वक ध्यान देते तो कालाचन्द आज भी मेरा नाती होता और आज की तरह आतंकित होने के बदले हम लोग खुले दिल से उसका स्वागत उत्सव के साथ करते ।

हमारे मरने के बाद बहुत समय तक लोग मोहम्मद फर्मूली को याद करेंगे और उससे घृणा करेंगे लेकिन वास्तव में उन्हें तुमसे घृणा करनी चाहिए, तुम लोग हमारी इस प्यारी मातृभूमि, हमारे देवताओं और मन्दिरों के विनाश का कारण हो, इसके लिए मोहम्मद फर्मूली उत्तरदायी नहीं है । "जिस दिन हमारा देश जाति और परम्पराओं की मूर्खता से ऊपर

उठ जाएगा उस दिन महान हो जाएगा'', जाओ, मेरे पास तुम्हारे लिए घृणा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है । मैं अपने नाती को रोकूँगा जरूर लेकिन वह तुम्हारी वजह से नहीं । तुम उसी नियति के योग्य हो जो तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है, मैं उसे भदुरिया की सुरक्षा के लिए रोकूँगा ।''

उनके सिर शर्म से झुक गए और वे चुपचाप वहाँ से चले गए ।

ज्ञानेन्द्रनाथ ने अपने साथ रूपाली और रूपानी को लिया और महल में चला गया । उसने राजा समरजीत से भेंट की ।

राजा ने भयभीत होकर कहा- ''बुजुर्गवार ! तुम्हें हर हालत में मेरी सहायता करनी है ।''

''जी श्रीमान ! इसका सिर्फ एक रास्ता है ।''

''रास्ता बताओ, मेरे पास फर्मूली से लड़ने के लिए सेना नहीं है ।''

''श्रीमान ! आप उसके पास सन्देश भिजवा दें कि हम लोग आपके पास बन्धक हैं, आशा है कालाचन्द वापस लौट जाएगा ।''

राजा ने सहमति में सिर हिलाया । एक बूढ़े की बात सुनना विवेक की बात होती है चाहे वह तुम्हारा गर्व चूर ही क्यों न कर दे ।

सीमा पर राजा समरजीत का दूत मोहम्मद फर्मूली से

मिला ।

वह क्रोध से चीखा- ''बन्धक ! मैं उस मूर्ख राजा को तलवार से सबक सिखलाऊँगा ।''

दूत ने समझाया कि राजा घोर निराशा में है, फर्मूली उसे सबक तो दे सकता है पर इसकी कीमत क्या होगी ?

मोहम्मद फर्मूली ने सिर हिलाया। भदुरिया सौभाग्यशाली है क्योंकि वहाँ उसका परिवार रहता है । उसने विनाश की बात सोची थी लेकिन वह इससे रूक गया । वह अपने दादा और पत्नियों का सामना जीवित या मृतावस्था में करने का साहस नहीं जुटा पा रहा था । वह सीमाओं से हट कर पूर्व की ओर बढ़ गया ।

अगले कुछ साल युद्ध और विनाश से भरे हुए थे । उसने दीनाजपुर पर चढ़ाई की । वहाँ का राजा भय से दीनाजपुर को उसके भाग्य के भरोसे छोड़ कर भाग गया । मोहम्मद मन्दिरों का नाश करता और धर्म परिवर्तन करता रहा । तर्पण घाट के किनारे खड़े होकर वह हंसने लगा । यही वह स्थान था जहां वाल्मिकि ने स्नान करके तर्पण किया था और बाद में रामायण की रचना की थी, इस घाट को उखाड़ कर फेंक दो,'' और घाट तोड़ दिए गए ।

इसके बाद उसने रंगपुर की ओर कूच किया । एक बार फिर हत्याओं, धर्म परिवर्तन और विनाश का ताण्डव आरम्भ

हुआ उसने मौत का जो रास्ता बनाया वह खून से भरा हुआ था। लाशों से उठने वाली बदबू के कारण वातावरण में चारों ओर दुर्गन्ध ही दुर्गन्ध फैल गई थी और चारों तरफ महामारी की एक लहर सी फैल गई थी।

इसके बाद वह सेना लेकर कामरूप की तरफ बढ़ा। उसने गौहाटी पर चढ़ाई की और कामाख्या के मन्दिर की तरफ घूरने लगा। यह शक्ति--और शिव की अर्द्धांगिनी--का मन्दिर था, यह बलिदान और कामुक पूजापाठ का केन्द्र था। यहाँ देश के हर भाग से यात्री आते थे।

उसने आदेश दिया- "इसे मिट्टी में मिला दो।"

मन्दिर तो तोड़फोड़ कर मिट्टी में मिला दिया गया, मूर्तियों को तोड़फोड़ कर नष्ट कर दिया गया, पुजारियों को तलवार के घाट उतार दिया गया, यात्रियों को मुसलमान बनने के लिए मजबूर किया गया।

जब मौत के इस खेल से वह सन्तुष्ट हो गया तो वह "कूचबिहार" की ओर बढ़ा। यह प्रदेश महानन्दा के पश्चिम में स्थित था और इसकी राजधानी थी।

कूचबिहार का शासक नरनारायण था। राजा का छोटा भाई सकलदेव, जो कि सिलारी के नाम से प्रसिद्ध था, राजा की सेनाओं का सेनापति था नरनारायण अपने भाई को प्यार करता था क्योंकि उसने देश का गौरव बढ़ाया था और उसने

नरनारायण को दीमरू, जयंतिया, चाचर और तिप्पर का मालिक बनाया था ।

वह एक अच्छा आदमी था और दया भाव से शासन करता था । उसने अपने देश को शस्य श्यामला और समृद्ध बना रक्खा था । सारी विजयें उसके नाम पर उसका भाई प्राप्त करता था । जब उन्होंने मुसलमान सेनाओं के आक्रमण की बात सुनी तो वे सारे राज्य से सेनाओं की टुकड़ियों को एकत्र करने लगे ताकि हमलावर को रोक कर पराजित किया जा सके ।

मोहम्मद फर्मूली की सेनाएं बादल की तरह--मौत के एक काले बादल की तरह आगे बढ़ रहीं थी । वह घोड़े पर बिलकुल सीधा बैठता था और उसके काले वस्त्र मीलों दूर से दिखाई पड़ते थे । वह मौत की एक भयानक सूरत लगता था। वह विशाल दिखाई पड़ता था और लोगों की कल्पना में एक पहाड़ सा लगता था और उसे एक नया नाम दे दिया गया ।

"काला पहाड़" !

युद्ध तेज और अल्पकालीन रहा । सकलदेव पराजित होकर कैदी बना लिया गया । नरनारायण ने संधि की चेष्टा की पर मोहम्मद नहीं माना । नरनारायण छिप गया और अपने अपमान का बदला लेने का मौका देखने लगा । जहाँ कहीं भी मोहम्मद जाता उससे पहले वहाँ यह नारा पहुँच जाता ।

"भागो ! काला पहाड़ आ रहा है !"

"छिप जाओ ! काला पहाड़ आ रहा है !"

"मर जाओ ! काला पहाड़ तुम्हारा धर्म परिवर्तन कर देगा !"

जहाँ कहीं भी वह गया वहाँ उसके मुख्य शिकार मन्दिर और पुजारी होते थे । वह मन्दिरों को नष्ट कर देता और पुजारियों की हत्या कर देता । वह हिन्दुओं को मुसलमान बनने के लिए मजबूर करता ।

उसका नारा होता था कि-

"मुसलमान बनो या मौत को गले लगाओ ।"

जो मुसलमान बन जाते वे जीवित रह जाते जो इन्कार करते उन्हें बिना दया दिखाए मौत के घाट उतार दिया जाता । वह निर्दयी, अत्याचारी और क्रूर था, वह सिर्फ मनोरंजन के लिए हत्या करता । खून की प्यास उस पर हावी हो गई थी ।

उसके सैनिक तक उसके कारनामों से कांपते थे । वे उसके साथ कूच करते थे पर इस बात से घृणा करते थे कि उसने उन्हें क्या बना दिया ? नूरूल हसन वफादारी के साथ उसका अनुसरण करता पर उससे एक दूरी बनाए रखता ।

ऐसा समय भी आता जब लोग काला पहाड़ के क्रोध से बचने के लिए भागते थे और मुसलमान सैनिक उन्हें अपने तंबुओ में चुपचाप शरण देते । जब नूरूल हसन से कहा

जाता कि वह उनका धर्म परिवर्तन करवाए तो वह सिर हिला कर सहमति व्यक्त करता, लेकिन जब वह गरीबों, भूखों और दलित लोगों को देखता तब उसका हृदय काले पहाड़ के आदेशों से विद्रोह कर उठता और वह उन्हें भागने देता था। उस समय पूर्वी भारत उसके नाम से कांपता था।

जब काला पहाड़ अपनी लूटपाट में लगा हुआ था तब क्रोध से भरी दुलारी सुलतान से कह रही थी- ''अब्बाजान ! आप एक परपीड़क इन्सान हैं, आप अपने दामाद को विनाश करने से रोकें। मुझे यह सब पसन्द नहीं है।''

''मेरी बच्ची ! वह एक अच्छा मुसलमान है। वह कोई गलत काम नहीं कर रहा है, मेरी सल्तनत बड़ी हो गई है और मेरा खजाना भर गया है।''

''क्या आप सिर्फ यही बातें सोचते हैं ? अब्बाजान ! क्या आपके मन में कभी लोगों की भलाई की बात नहीं उठती ? क्या उनकी खुशी आपके लिए कोई मायने नहीं रखती ? अगर वे धर्म परिवर्तन से इन्कार करते हैं तो आप उनकी हत्या करा देते हैं और अगर वे धर्म बदल लेते हैं तो आप उन्हें गुलाम बना लेते हैं।''

''मेरी बच्ची ! मैं किसी को गुलाम नहीं बनाता, मुसलमान, मुसलमान है। शूरू शुरू में नए मजहबी को अच्छा मुसलमान बनने में दिक्कत होती है, इन्हें समय दो तो वे भी

काला पहाड़ जैसे बन जायेंगे।''

''आपको उन्हे रोकना ही चाहिए, अब्बाजान ! और यह क्या नाम है ''काला पहाड़'', क्या मैं किसी शैतान से ब्याही गई हूँ ?''

सुलतान ने बड़े गौर से अपनी बेटी की ओर देखा। शुरू शुरू में उसे ख्याल नहीं आया लेकिन फिर उसने पूछा- ''क्या तुम माँ बनने वाली हो ?''

''हाँ ! और मैं होने वाले बच्चे से नफरत करती हूँ। एक ऐसे बच्चे को जन्म देना मेरी इच्छा नहीं है जिसका बाप शैतान हो। मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ।''

सुलतान खुश था और उसका मन सहानुभूति से भर गया। ''तुम्हें आराम करना चाहिए, बेटी ! और मुझ जैसे बूढ़े आदमी से बहस नहीं करनी चाहिए। तुम अपने महल में जाओ। काला पहाड़ यहाँ आएगा, तुम अपना गुस्सा उस पर उतार सकती हो।''

टांडा पहुँचने पर काला पहाड़ का जोरदार स्वागत हुआ। शहर ने उसकी विजय का उत्सव मनाया, सुलतान ने उसका सम्मान करते हुए उसे देश का सबसे बड़ा सरदार बना दिया। दिनरात बहुत दिनों तक उत्सव मनाए गए।

जब मोहम्मद फर्मूली जनानखाने में पहुँचा तो दुलारी बीमार दिखलाई पड़ रही थी। वह उसे बेहद प्यार करता था

और दुलारी भी उसे प्यार करती थी, लेकिन दुलारी को उसके नए तौर तरीके पसन्द नहीं थे । उसने दुलारी को झिड़क कर कहा -''तुम कुछ दिन पहले तक तो ठीक थीं ।'' उसकी झिड़क का कारण दुलारी की उदासीनता थी ।

''अब्बाजान के अलावा कोई तुम्हारी वापसी का इच्छुक नहीं था मैं ऊबी हुई हूँ ।''

''क्या मुझसे ?''

''हाँ ! तुमसे, मैं गर्भवती हूँ । कृपया मुझे अकेला छोड़ दो बच्चा होने के बाद मुझमें तुम्हारा स्वागत करने की सामर्थ्य आ जाएगी ।''

उसे लगा जैसे दुलारी ने उसके मुँह पर चांटा मार दिया हो ।

दुलारी ! मैं तुम्हारा खाविन्द हूँ, कोई अजनबी नहीं ।''

''मेहरबानी करो, मैं बीमार हूँ ।''

औरत द्वारा ठुकराया गया मोहम्मद जनानखाने से वापस चला गया- एक आम आदमी की तरह एक महान विजेता अपने घर में ही पराजित हो गया था ।

वह आराम से अपने दिन गुजारने लगा । वह सुलतान के साथ राज्य के मामलों पर बहस करता, वाजिद और दाऊद को शस्त्र विद्या की शिक्षा देता । लड़के सयाने हो गये थे और वे मोहम्मद को अपने आदर्श व्यक्ति के रूप में देखते तथा

उसी के चरण चिन्हों पर चलने की चेष्टा करते । वे उसे प्यार करते थे क्योंकि वह स्वभाव से सज्जन था । उनको समझाने की कोशिश करता तथा उन्हें अच्छा योद्धा बनाने के लिए वह असीम धैर्य का प्रदर्शन करता ।

समय घोघे की चाल से आगे सरक रहा था और ज्यों ज्यों समय गुजर रहा था वह अत्याधिक परेशानी का अनुभव कर रहा था । आखिरकार दुलारी ने एक कन्या को जन्म दिया । वह उससे मुलाकात करने उसके महल में गया । उसने उत्तेजित होकर कहा ! ''हम इस बच्ची को ''फातिमा'' कहेंगे'' ।

वह केवल चुप ही नहीं रही बल्कि उसके व्यवहार में साफ निष्ठुरता झलक रही थी ।

दुलारी ने कहा- ''ठीक है हम इसे फातिमा ही कहेंगे । यह हमारे प्रेम का फल है लेकिन अब मैं तुम्हारे बच्चों की माँ नहीं बनूँगी ।''

''दुलारी तुम मेरी बीबी हो ।''

''केवल नाम भर के लिए । मैं कालाचन्द राय भादुरी की पत्नी थी और अब भी हूँ । मैं मोहम्मद फर्मूली की बीबी नहीं हूँ और काला पहाड़ की तो कोई भी नहीं हूँ ।''

''तब तो ठीक है, मैं किसी और से निकाह कर लूँगा ।''

''जो तुम्हारी मरजी हो करो, इन धमकियों का मेरे ऊपर

कोई असर नहीं है । मैं तुम्हारे घृणित बच्चे की माँ अब नहीं बन सकती ।"

"लेकिन दुलारी ! मैं तुमसे प्यार करता हूँ । तुम यह जानती हो, अगर तुम मुझे अस्वीकार कर दोगी तो मैं कहाँ जाऊँगा ?"

उसने एक बच्चे की तरह दुलारी की मिन्नतें की, दलीलें पेश कीं और धमकियाँ भी दीं, पर दुलारी नहीं पसीजी ।

उसने व्यंग्य से कहा- "आपके कदमों के सामने सारी दुनिया पड़ी हुई है ।"

उसने दुलारी की गोद में अपना सिर छिपा लिया, "दुलारी ! क्या तुमने सचमुच मुझे अस्वीकार कर दिया है?"

"अल्लाह की मरजी के बाद औरत की मरजी होती है । मैं ऐसे इन्सान की बीवी नहीं रह सकती जो सिर्फ कत्ल की प्यास बुझाने के लिए कत्ल करता है, विनाश की प्यास बुझाने के लिए विनाश करता है और सिर्फ अपनी धर्म परिवर्तन की प्यास बुझाने के लिए लोगों को मजहब बदलने के लिए मजबूर करता है ।"

"दुलारी ! तुम एक मुसलमान हो और हिन्दुओं (काफिरों) की सी बातें कर रही हो और उनसे प्यार करती हो ।"

वह उदासीनता से मुस्करा दी ।

''क्या हिन्दू इन्सान नहीं हैं ? हिन्दू और मुसलमान के बीच फर्क क्यों है ? क्या चाँद और सूरज केवल मुसलमानों को ही रोशनी देते हैं ? क्या वो धर्मों के बीच फर्क करते हैं ? महानन्दा सबको पानी देती है क्या वह मुसलमानों को अच्छा और मीठा पानी देती है ? जब बीमारियाँ फैलती हैं, क्या मुसलमानों में नहीं फैलती हैं ? क्या आग से सिर्फ हिन्दू ही जलते हैं ? जो खाना आप खाते हैं क्या वह हिन्दू नहीं खाते ? मैं मानती हूँ कि मैं खुद हिन्दू नहीं हूँ ? पर क्या आप एक हिन्दू नहीं हैं ? इस समय न सही कभी तो आप भी हिन्दू ही थे। क्या केवल मुसलमान ही पवित्र, दयालु और प्यार करने वाले होते हैं ? अपने दादा के बारे में ही सोचिए वह भी एक बहुत पवित्र हिन्दू हैं, क्या आप चाहते हैं कि वे एक मुसलमान होते ?

''दुलारी.............!''

''बस ! बस !! मैं सिर्फ इतना जानती हूँ कि- ''अब आप इन्सान नहीं रहे । आपके अन्दर इन्सानियत मर चुकी है । आप अब सिर्फ एक तलवार, एक आग, एक घृणा और मौत बन गए हैं । इसके अलावा आप और कुछ भी नहीं हैं।''

''दुलारी ! क्या तुम अब मुझे प्यार नहीं करतीं ?''

दुलारी ने कहा- ''बड़ी विचित्र बात है, कालाचन्द ने बिना मांगे मेरा प्यार पाया, लेकिन काला पहाड़ को उसकी

भीख मांगनी पड़ रही है। आप मुझमें जो कुछ देख रहे हैं वह सिर्फ हड्डी और मांस का एक पुतला है, जो कुछ दिनों में समाप्त हो जाएगा, लेकिन मेरे अन्दर एक आत्मा थी जो अब मर चुकी है।''

वह खड़ा हो गया। उसकी आंखों में खोया खोयापन था। वह पुरी की यात्रा की ही भाँति अकेलापन और मित्रहीनता का अनुभव कर रहा था। यह सच था कि और भी बहुत सी औरतें थी लेकिन दुलारी के बिना सब कुछ निरर्थक सा लगता था। जीवन फीका हो गया था। वह लड़खड़ाते हुए दुलारी के महल से बाहर निकल आया।

उसने सब कुछ सुलतान को बता दिया।

''आलीजाँ ! इससे छुटकारा पाने का सिर्फ एक ही रास्ता है या तो मैं महान मुगल अकबर की सेना में भर्ती हो जाऊँ या फिर आपके नाम पर लूटमार करूँ। मेरे लिए आप ही फैसला करें, आलीजाँ !''

मोहम्मद ! मैंने तो तुम्हें अस्वीकार नहीं किया है। मैं तुम्हें अपने बेटे की तरह प्यार करता हूँ, मुझे छोड़कर मत जाओ। सारी फौज तुम्हारी है लेकिन मुझे मत छोड़ो।''

''ठीक है, आलीजाँ ! मैं जौनपुर पर हमला करूँगा। वहाँ का सुलतान बहुत घमंडी है, उसे सबक देने की जरूरत है।''

"मोहम्मद ! तुम उसे सबक जरूर दो लेकिन मुझे छोड़कर मत जाओ ।"

काला पहाड़ ने जौनपुर पर चढ़ाई कर दी ।

सुलतान बाराबक शाह भी उत्तरपूर्व का एक साहसी शासक था, जो कि मुसलमान हमलावरों की उस आंधी के साथ आया था, जो धनी और नए देशों में बसने के लिए आए थे । वह लापरवाह किस्म का आदमी था जो जंग के लिए जंग करने का शौकीन था । वह अपने पड़ोसियों के लिए एक मुसीबत था । वह लोहे का एक ऐसा चना था जिसे चबाना मुश्किल था ।

जौनपुर के अपने अजेय दुर्ग में वह काला पहाड़ का इन्तजार कर रहा था । उसने काला पहाड़ के अभियानों के विषय में सुन रक्खा था । अब वह उत्साह के साथ अपनी हथेलियाँ मल रहा था । ऐसे एक आदमी से लड़ना उत्तेजनात्मक होगा और अगर वह काला पहाड़ को पराजित कर सका तो बंगाल का तख्त हासिल करना आसान होगा । यह एक ऐसी चीज है जिसके लिए लड़ना ठीक है । उसने बचाव और आक्रमण की अपनी योजनाएं बनाई । वह काली मौत अर्थात् काला पहाड़ को यह सबक सिखा देगा कि बाराबक ऐसा साधारण इन्सान नहीं है जिसे आसानी से जीता जा सके ।

काला पहाड़ जौनपुर की सीमा पर ठहर गया ।

"नूरूल हसन ! मैं समझता हूँ कि हम एक जाल में फंस रहे हैं । सुलतान यह आशा लगाए बैठा है कि मैं सीधे उसके किले तक पहुँच कर सामने से हमला करूँगा और जब हम किले के दरवाजे तोड़ने में व्यस्त होंगे वह पीछे से आकर हमें दबोच लेगा, ताकि हम चक्की में पिस जाएं ।"

"हुजूरेआला ! क्या मैं किले को घेर लूँ ?"

"नहीं हम धोखा देंगे । हम फौज के एक हिस्से को सामने से हमला करने के लिए भेजेंगे । मैं यहीं रूका रहूँगा, तब मैं उस गंदे शैतान पर चोट करूँगा ।"

"हुजूरेआला ! क्या सुलतान धोखा खा जाएगा ?"

काला पहाड़ ने रूखी आवाज में कहा- "हमें ऐसी ही उम्मीद करनी चाहिए ।"

काला पहाड़ किले तक आया और उसने किले की जांच की । उसने सुलतान को बाहर निकालने की चाल चली । बाराबक काला पहाड़ का इन्तजार एक ऐसी मकड़ी की तरह कर रहा था जो मक्खी के इन्तजार में होती है, लेकिन किले पर उसे काला पहाड़ की जासूसी पसन्द नहीं आई ।

कई दिन बीत गए लेकिन युद्ध नहीं हुआ । उसे आश्चर्य हुआ कि कहीं काला पहाड़ डर कर भाग तो नहीं गया । तब नूरूल हसन ने सामने से हमला किया, वह काले कपड़े पहने

हुए था, बाराबक खुश था कि अब काला पहाड़ का अन्त होगा, वह समझ रहा था कि काला पहाड़ खुद हमले की अगुवाई कर रहा है। उसने अपने सिपाही किले की दीवारों और बुर्जों में तैनात कर रक्खे थे। जब ये सिपाही काला पहाड़ को उलझाए हुए थे उसने किले के चोर दरवाजों पर बहुत बड़ी फौज इकट्ठी की। बाराबक खुशी से चिल्लाया ! ''वह जाल में फंस गया है। हमला करो।''

चोर दरवाजा खोल दिया गया। बाराबक शाह की अगुवाई में फौज किले से निकलने लगी। वे किले का चक्कर लगा कर काला पहाड़--या जिसे वह काला पहाड़ समझ रहे थे--की सेना के पीछे आ गए।

जोरदार शोर और फौज की चिल्लाहट के कारण नूरूल हसन एक क्षण को ठिठका और उसने मुड़ कर पीछे की तरफ देखा। क्या खूबसूरत जाल है ! वह अट्टहास कर उठा उसके सेनापति ने कितना ठीक अंदाजा लगाया था।

उसने अपनी टुकड़ी को घुमा कर पीछे से शत्रु पर हमला कर नया व्यूह रचा। किले का दरवाजा खुला और वहाँ से सैनिक बाहर निकलने लगे। अब बंगाली सिपाहियों के बचने का कोई रास्ता नहीं था लेकिन नूरूल हसन हंस रहा था। यह एक बड़ा मजाक था।

घमासान युद्ध हुआ। हर सिपाही मौत के लिए लड़ रहा

था । कोई छूट न मांगी गई और न दी गई, अगर काला पहाड़ पराजित हो जाता है तो बंगाल की सल्तनत उसकी है । बाराबक सीधा काले कपड़े पहने हुए आदमी की ओर बढ़ा ।

जब उसका ध्यान काल्पनिक काला पहाड़ पर केन्द्रित था असली काला पहाड़ अपने सैनिकों के साथ निकला और जौनपुर की सैना के टुकड़े उड़ाने लगा । सुलतान ने घूम कर पीछे देखा और उसे जो कुछ नजर आया उस से वह घबरा गया ।

उसने अपने आपको बचा कर किले में घुसने की कोशिश की लेकिन वह दो पाटों के बीच फंस गया । अपनी सल्तनत और जिंदगी को बचाने के लिए युद्ध के अलावा और कोई दूसरा रास्ता नहीं था, वह भयभीत था ।

इसके बाद जो कुछ हुआ वह एक कत्लेआम था । लड़ाई अधिक नहीं हुई । सुलतान ने अपनी सामरिक चालों पर भरोसा किया लेकिन उसकी मात हो गई । जौनपुरी पीछे हटे लेकिन काला पहाड़ निष्ठुर था ।

उसने सुलतान के सिपाहियों को भगा दिया था । सुलतान की कुछ टुकड़ियों ने हथियार डाल कर दया की भीख मांगी कुछ लोग दया की भीख मांगते मांगते मारे गए और कुछ लड़ते लड़ते मारे गए । सारा मैदान लाशों से पट गया ।

काला पहाड़ ने सुलतान को घुटनों के बल खड़ा देखा ।

जौनपुर पर कब्बा हो गया । उसके मन्दिर नष्ट कर दिए गए । वहाँ के लोगों को धर्म परिवर्तन और मृत्यु में से एक का वरण करने को कहा गया क्योंकि यही काला पहाड़ की नीति बन गई थी ।

सारी फौज खुशियाँ मना रही थी पर काला पहाड़ एकाकी और दुःखी था । वह बहुत अकेला पड़ गया था । उसके पास प्रसिद्ध सुंदरियों का जमघट था । उसके कदमों पर सुंदरतम कुंआरियाँ पड़ी हुई थीं, जिनका वह जैसा चाहता वैसा उपभोग कर सकता था, लेकिन उसने इन सबको अस्वीकार कर दिया । उसने जीवन भर और अपने खूनी हमलों के दौरान कभी यौनाचार नहीं किया था । उसने बलात्कार करने वालों और शराब पीने वालों को कभी नहीं झिड़का लेकिन उसने कभी इन चीजों में स्वयं भाग नहीं लिया ।

उसने अपनी दो पत्नियों रूपाली और रूपानी से प्यार किया था और वे दोनों कभी उसका सारा संसार थीं, और जब दुलारी उसकी जिंदगी में आई तो उसका सारा जीवन उसी के चारों ओर केंद्रित हो गया । वह जौनपुर के तख्त पर बैठ कर उसकी बातें सोच रहा था ।

उसने अपनी हत्या करने की वासना को रोकने की चेष्टा की, लेकिन इस वासना ने उसे और अधिक जकड़ लिया ।

मन्दिरों को देखकर उसके मन में आग लग जाती थी। वह निस्सहाय होकर अपनी ही घृणा का शिकार हो गया था।

कुछ समय बाद उसने नूरूल हसन को बुलवाया।

"बहुत अच्छा, हजूरेआला !"

और उसने काशी पर चढ़ाई कर दी। काशी नरेश राजा विजय सिंह जान बचा कर शहर से भाग गया। विजय सिंह कायर था, उसे अच्छा भोजन और औरतों के अलावा और कुछ नहीं भाता था। यह कैसी विडम्बना है कि इसी विजय सिंह के एक वंशज चेत सिंह ने वारेन हेस्टिंग से युद्ध किया और विजय प्राप्त की, लेकिन महाराजा विजय सिंह कायर था। काशी बिना युद्ध के हार गई।

एक बार फिर काला पहाड़ ने अपने सैनिकों को कत्लेआम, धर्म परिवर्तन और विनाश का खेल खेलने की छूट दे दी। औरतों के साथ बलात्कार किया गया, उन्हें पीटा गया और अंत में उनकी हत्या कर दी गई।

मर्दों को लूटा गया, नंगा किया गया, उन्हें पीटा गया, उनका धर्म परिवर्तन किया गया या मौत के घाट उतार दिया गया। मन्दिरों को ध्वस्त कर दिया गया। मूर्तियाँ तोड़ दी गईं, और अन्त में उनमें आग लगा दी गई। सड़कें खून से लाल हो गई, गंगा लाशों से पट सी गई, काशी का पूर्ण विनाश कर दिया गया।

वह अपने तम्बू के अन्दर सोच विचार में खोया हुआ युद्ध की सूचनाओं का इन्तजार कर रहा था।

"चार हजार मारे गए, एक हजार ने धर्म परिवर्तन कर लिया," एक दूत संदेश लाया।

दूसरे दूत ने खबर दी- "तीन हजार मारे गए, एक हजार ने मजहब बदल लिया।"

दूत संदेश ला रहे थे।

उसके बड़े तम्बू के बाहर भीतर चारों तरफ सैनिकों के आने जाने का शोर शराबा था।

एक और दूत आया, उसने कहा- "केदारेश्वर लिंगम के मन्दिर के अलावा सारे मन्दिर मटियामेट कर दिए गए हैं।"

"बहुत अच्छे !" काला पहाड़ ने कहा- "केदारेश्वर लिंगम को नुकसान मत पहुँचाना।"

किसी को मालुम नहीं था कि वह इस मन्दिर को क्यों* बचाना चाहता है ? लेकिन यह मन्दिर आखिर बच ही गया। उसने यह काम सिर्फ अपने दादा के सम्मान में किया था,

---

* क्यों न बचाता............? आखिर उसे भी तो अपने पुरखे हजरत मोहम्मद साहब की परम्परा को कायम रखना था। जिन्होने काबा की मस्जिद में सिर्फ "संगे असवद" को छोड़ कर बाकी सारी तीन सौ साठ मूर्तियों का सफाया कर दिया था।

लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

जिनके साथ वह वर्षों पहले काशी आया था और उसने उस मन्दिर में पूजा की थी। वह इस मन्दिर की और अपने दादा की स्मृति को अपवित्र नहीं करना चाहता था, जिन्होंने उसे पालापोसा था।

नूरूल हसन ने उसे देखा तो काला पहाड़ एक परपीड़क की तरह दीख रहा था। उसने साहस करके कहा- "हुजूरेआला ! आप बहुत कठोर हैं।"

उसने जवाब दिया- "जब तक मैं जिन्दा हूँ, धरती के ऊपर हिन्दू धर्म नहीं रहेगा। मैं इसे दुनिया के चेहरे (नक्शे) से मिटा दूँगा। नूरूल हसन ! मैंने कसम खाई हुई है।"

"जी हुजूर !"

इसी बीच एक बूढ़ी औरत तम्बू में घुसी। उसके बाल उलझे हुए थे, कपड़े चीथड़े चीथड़े और खून से सने हुए थे वह अर्धनग्नावस्था में थी। उसकी उमर पचास साल से अधिक थी लेकिन उसकी टांगों और मुंह में खरोंचें लगी हुई थीं।

सिपाहियों ने उसे धकेलने की बहुत चेष्टा की लेकिन ऐसा लग रहा था कि उसकी शक्ति उनसे कहीं अधिक है। जब काला पहाड़ ने उसे देखा तो वह खड़ा हो गया। तम्बू में मौत का सा सन्नाटा छा गया।

"काला पहाड़............" वह अपनी पूरी ताकत के साथ

दोबारा चिल्ला कर बोली- ''काला ....पहाड़ !!''

वह कुछ नहीं बोला, बस ! उसे घूरता रहा ।

वह पहले की तरह पूरी ताकत के साथ चीख कर फिर बोली- ''काला........पहाड़ !!! मेरी तरफ देखो, मैं..... ''मैं एक बूढ़ी और विधवा औरत हूँ, मेरे साथ जबरदस्ती की गई । मैं एक हिन्दू हूँ, काला पहाड़ !, इसलिए मुझे भी तुम्हारे इस जुल्म के खेल में शामिल कर लिया गया ।''

तब भी वह नहीं बोला, वह एक बुत की मानिन्द खड़ा हुआ था ।

''मैं कौन हूँ ? काला पहाड़ ! तुम मुझे जानते हो ? मेरे इस सताए हुए शरीर से अपने मन को सन्तुष्ट करो ।''

वह फिर भी कुछ नहीं बोला । उसकी आंखों में आंसू भरे हुए थे जो पलकों से बाहर निकलने के लिए जोर लगा रहे थे अन्त में उसकी आंखों से आंसू झरने लगे ।

''नानी माँ...........! केवल यही शब्द उसकी जुबान से निकले ।

''हाँ ! मैं तुम्हारी नानी माँ हूँ काला पहाड़ !'' इन्दुबाला देवी सिसक कर बोली, या मैं तब तुम्हारी नानी माँ थी जब तुम कालाचन्द थे और आज मैं तुम्हारे सामने एक ऐसी औरत के रूप में खड़ी हूँ जो भ्रष्ट हो चुकी है, जो पापिन है, जिसे कभी मोक्ष नहीं मिलेगा । तुमने मुझे आवागमन के महाचक्र

में फंसा दिया। मेरा सात युगों तक मोक्ष नहीं होगा।"

वह जोर जोर से रो रही थी और फिर उसने अपने मुंह में कोई चीज डाल ली।

उसने कहा- "मैं तुम्हें श्राप देती हूँ, काला पहाड़ या कालाचन्द कि तुम शाश्वत दुखों में रहोगे। मैं तुम्हें श्राप देती हूँ तुम्हारी मौत और लोगों की तरह आसानी से नहीं होगी। मैं तुम्हे श्राप देती हूँ कि तुम आत्मपीड़ा के आतंक से अकेलेपन तथा बिना स्नेह और प्रेम के मरोगे"।

इतना कहकर वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ी। उसके बाद उसका शरीर ऐठने लगा और उसकी तड़पनें बढ़ने लगी। उसके मुंह से झाग निकलने लगे, तथा शीघ्र ही उसकी तड़पन भी बन्द हो गई और वह सदा-सदा के लिए शान्त हो गई।

काला पहाड़ उसके पास तक गया। उसकी आंखों से आंसू टपक रहे थे। उसमें इन आंसुओं को पोंछने की ताकत नहीं थी। नूरूल हसन ने झांक कर वृद्धा की जांच की।

उसने सपाट आवाज में कहा- "यह मर चुकी है, मेरा ख्याल है इन्होंने जहर खा लिया है।"

काला पहाड़ होठ काटने लगा। वह वृद्धा के मृत शरीर को घूर रहा था। उसके मन में अनेक चित्र उभर कर मिट रहे थे। उसने हर उस चीज को नष्ट कर दिया था जिसे वह प्यार करता था। यहाँ तक कि उसने अपने परिवार के सम्मान को

भी नष्ट कर दिया था ।

अब दुनिया में जीने को रह ही क्या गया ? वह गम्भीर मुद्रा में सोच रहा था कि उसने जिस चीज को हाथ लगाया वह मौत में बदल गई । वह यहाँ खड़ा था--बिल्कुल अकेला, कोई उसे अपना कहने वाला नहीं था, वह किसी को अपना नहीं कह सकता था ।

वह फटी हुई सी आवाज में बोला- ''नूरूल हसन जाओ, हर चीज को रोक दो, हाँ ! हाँ !! हर चीज को........''

नुरूल हसन चला गया । वह स्वयं विनाश को पसन्द नहीं करता था और चारों तरफ जो कुछ होता था उससे उसका मन विद्रोह करता था ।

काशी ने शान्ति की सांस ली ।

लेकिन काला पहाड़ ने अपने आपको तम्बू में बन्द कर लिया था, अब उससे कोई नहीं मिल सकता था । उसने खाने पीने से भी इन्कार कर दिया । वह फर्श पर लेट कर जोर-जोर से कराहता रहता था ।

नूरूल हसन तम्बू में तांकझांक करता और अपने सेनापति को फर्श पर उलटा लेटा हुआ देखता था तो उसकी समझ में कुछ नहीं आता था कि वह क्या करे ? वह तम्बू के अन्दर नहीं जा सकता था क्योंकि वह जानता था कि इसके माने मौत होगी क्योंकि काला पहाड़ की जो मनःस्थिति थी

उसमें वह किसी को भी माफ नहीं करेगा। वह वहाँ तीन दिन और तीन रात पड़ा रहा और जब चौथे दिन नूरूल हसन ने तम्बू में झांका तो वहाँ कोई नहीं था।

वह तेजी से तम्बू के अन्दर घुसा और उसने चारों तरफ निगाह उठाई। वहाँ काला पहाड़ का कोई निशान नहीं था। चारों तरफ पहरा रहने के बावजूद भी वह कैसे गायब हो गया ? यह एक रहस्य था, लेकिन एक मेज के ऊपर नूरूल हसन को एक सील बन्द लिफ़ाफा अवश्य मिला। लिफाफे पर शहजादी दुलारी का नाम लिखा हुआ था। उसने पत्र उठा लिया। वह हैरान था कि उसका सेनापति आखिर कहाँ चला गया होगा ?

दुलारी ने उस पत्र को अपने भाइयों और अब्बा के सामने पढ़ा, जो इस प्रकार था–

"मैं प्रिय लगने वाले शब्द नहीं लिख सकता, क्योंकि मैं भूल गया हूँ कि प्यार क्या होता है ? मैं एक घृणित व्यक्ति हूँ जिसने दुनिया में हर उस चीज को नष्ट कर दिया है जिसे वह प्यार करता था। अब मैं स्वयं अपना विनाश करने के लिए इस जगह से जा रहा हूँ। मैं रात को एक चोर की तरह छिप कर भागने वाला हूँ, अगर तुम्हारे लिए मैं कुछ हूँ तो कभी कभी मेरी याद करके मेरे नाम दो आंसू बहा देना। मैं जा रहा हूँ पर मुझे मालूम नहीं कि कहाँ ? लेकिन मैं कहीं भी जाऊँ मैं

फिर से कालाचन्द राय भादुरी बनूँगा । मुझे इस बात का अफसोस है कि मैं तुम्हें नहीं देख पाऊँगा । मैं तुम्हें बेइन्तहां प्यार करता हूँ । मैं प्रायश्चित कर रहा हूँ और जब तक जिन्दा रहूँगा प्रायश्चित करता रहूँगा, अल्विदा ! नन्हीं फातिमा का ख्याल रखना । सुलतान को सलाम और तुम्हारे भाइयों को खुदा खैरियत बख्शे । तुम्हारा और सिर्फ तुम्हारा............. ''कालाचन्द''।''

उसकी आंखों से आंसू बहने लगे और वह बिना किसी शर्म के रो रही थी ।

सुलतान दुख से कराह रहा था । उसने कहा- ''मुझे अब तक मिले इन्सानों में वह सर्वश्रेष्ठ था ।''

''अब्बाजान ! देखिए, एक औरत ने मुल्क के लिए क्या करवा दिया ? मैंने इस मुल्क को बरबाद कर दिया, इसे नष्ट कर दिया । संसार मुझे दोष देगा, उसे नहीं जो मेरा पति था । अगर मैं उसे प्यार न करती तो यह सब कभी नहीं होता । ओह, अब्बाजान ! मैं इस दुनिया की सबसे बड़ी पापिन और हत्यारिन औरत हूँ ।''

सुलतान ने उसे सान्त्वना देने की कोशिश की, पर वह शान्त न हुई ।

जब वह अकेली रह गई तो महानन्दा की ओर एक टक देखने लगी । यहीं उसका प्यार जागा था और यहीं उसकी

घृणा ने जन्म लिया था। यहीं वह जिन्दा रही है और यहीं वह मरेगी।

गोधूलि में जब कोहरा उठना आरम्भ हुआ तो एक एकाकी छाया नदी की ओर जा रही थी। वह छाया घाट के पास जाकर एक क्षण को ठिठकी, फिर सीढ़ियों से उतर कर नीचे चली गई। इसके बाद दुलारी के विषय में किसी ने कभी कुछ नहीं सुना।

हिमालय के बर्फानी ढलान में एक आदमी अकेला चल रहा था। वह लंगोट के अलावा कुछ नहीं पहने हुए था। हवा तेज और ठिठुरन भरी थी, लेकिन ऐसा लगता था कि उसे इसकी परवाह नहीं है। उसके पैर नंगे थे और एड़ियाँ फटी हुई थीं। उसके हाथों में उगलियाँ नहीं थी, उसका शरीर फट सा गया था और हर सांस के साथ उसका खून जम रहा था। उसके हाथ में सहारे के लिए कोई लाठी नहीं थी और कभी कभी वह फिसल पड़ता था। उसे गहरी पीड़ा हो रही थी पर वह उसे सह रहा था।

उसके चेहरे की रेखाओं से उसकी पीड़ा के दर्शन हो रहे थे। वह बार बार गिर कर खड़ा होता था और घिसट घिसट कर फिर चलने लगता था। उसके बाल लम्बे थे पर अब वे बर्फ से ढक गए थे। वह जान रहा था कि वह अधिक समय तक जीवित नहीं रहेगा, लेकिन वह आगे बढ़ता जा रहा था।

केदारनाथ में कहीं पर एक महालिंगम है, जिसे ''केदारेश्वर लिंगम'' भी कहा जाता है । वह मौत से पहले वहाँ पहुँच जाएगा, इसी विश्वास के साथ वह तेजी से आगे बढ़ता जा रहा था, परन्तु उसे क्या पता था कि उसके काले कारनामें उसके लक्ष्य में बाधक हैं । अन्ततः वह उस मौत की आगोश में समा गया जिसे उम्रभर वह दूसरों को देता रहा ।

महानन्दा जो गंगा और गोदावरी से मिलकर और अन्त में समुद्र में समाने के लिए निरन्तर बह रही थी । वह बिना विचार और बिना किसी की परवाह के हमेशा की तरह कलकल कर रही थी । लोग इसके किनारे स्नान करने, पूजा पाठ करने और पवित्र होने के लिए एकत्र होते और इसी के किनारे उस व्यक्ति के विषय में एक ''किवदन्ती'' का जन्म हुआ जिसने इस भयँकर विनाशलीला को जन्म दिया था । वे उस ''काला पहाड़'' को रूद्र का अवतार कहते हैं जो धरती पर अपना जीवन एक विनाशकर्ता के रूप में समाप्त करके केदारेश्वर लिंगम से एकाकार हो गया था । विधि की कैसी विचित्र विडम्बना है ?

६

सब कुछ खतम हो गया, महानन्दा आज भी उसी तरह कलकल करके बहती जा रही थी, बस ! अगर कुछ नया हुआ तो, वह यही कि वो घाट अब पहले की सी तरह न थे, न वो चहल पहल और ना ही वो जमघट, एकदम भयावह और सुनसान ! मानों किसी बीती दास्तां को बयान कर रहे हों।

बस ! अगर नहीं होगा, तो वह दुलारी और कालाचन्द का सा इश्क जन्म नहीं लेगा, जिसने काल के विकराल रूप को जन्म दिया।

वह केदारेश्वर की आगोश में समाते ही सारा दृश्य उसके दिमाग में घूमने लगा, और वह बर्फ में पड़ा-पड़ा बुदबुदा रहा था।

नहीं ! नहीं !! मैं फिर आऊंगा, बदले की आग ने अभी तक उसका पीछा नहीं छोड़ा था।...................और अन्ततः उसके पुराने हिन्दू संस्कार जाग ही उठे।

यह क्या कह रहे हो ?...................कहीं से अजनबी सी

आकाशवाणी हुई । काला पहाड़ ! ये काफिरों की सी सोच तुम्हारे अन्दर कहां से आ गयी, तुम तो एक सच्चे मुसलमान हो, तुम्हे दोबारा जन्म नहीं लेना है ।

मेरा पहला जन्म कहां से हुआ ? काला पहाड़ बुदबुदाया, ये तो अल्लाह ने तुम्हे अपने बन्दों की हिफ़ाजत और दीने इस्लाम को महफूज रखने के लिए भेजा था ।

क्या वह खुदा मुझे दोबारा नहीं भेजेगा ?

नहीं ! अब तुम्हारा इन्साफ कयामत के दिन खुदा और उसके रसूल के सामने होगा ।

और उन कमीने पण्डों का ?

उनको खुदा दोजख की आग में डालेगा, और तुम्हे जन्नत बख्शेगा, जहां तुम्हे वो सभी नियामतें हासिल होंगी, जो इस दुनिया में नहीं हैं, तुमने अल्लाह की राह में अपने को कुर्बान कर दिया ।

तुम कौन हो ?

मैं एक फरिश्ता हूँ जो अल्लाह के हुकम से तुम्हें लेने आया हूँ । तुम मुझे देख नहीं सकते ।

या अल्लाह ! कैसा मन्जर है ? मैं कहां जा रहा हूँ, क्या यही सब मेरे नसीब में लिखा था ?

अचानक फिर आवाज आई.......दोबारा आकाशवाणी हुई । क्या वहां भी हिन्दू-मुसलमान की जगह अलग अलग है ?

काला पहाड़ ! ये सब सवाल-जवाब सिर्फ खुदा की कचहरी में होंगे, तुम्हें जो कुछ कहना होगा, वहीं कहना।

एक ऐसी विचित्र जगह पर उसने अपने को पाया, जिसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी, और वह जोर से चीखा-चिल्लाया..............पर वहां उसकी चीख सुनने वाला कोई नहीं था।

काला पहाड़ !..............मैं वही तुम्हारी नानी माँ हूँ, मुझे पहचानो ! मैं तुम्हें श्राप देती हूँ तुम इसी आवागमन के चक्कर में फंसकर दुख उठाओगे।

अरे देखो ! जैनब ने बुढ़ापे में भी एक औलाद को जन्म दिया है। क्या खुदा की कुदरत है ?............बच्चा बिल्कुल निपट अन्धा है, और उसका कोई हाथ भी नहीं है।

या अल्लाह ! ऐसी औलाद से तो बेऔलाद ही ठीक थी, जैनब बिस्तर पर पड़े-पड़े दर्द से कराह रही थी। पहले ही कौन सा कम दुख है, जो अल्लाह ने एक दुख और दे दिया।

कुछ शर्म करो ! अल्लाह को तोहमत लगा रही हो ? हमीद ने नसीहत भरे स्वर में कहा।

गुस्से से भरकर...............एक तू है हर वक्त बन्दर की तरह चिपटा पड़ा रहता है, और ऊपर से उसे अल्लाह की देन बताता है।

चुपकर...............हरामजादी, तेरे मुंह में खाक, अल्लाह

रहम कर अपने बन्दों पर !................चीखता हुआ हमीद घर से बाहर निकल गया ।

अल्लाह ने इस छोटी सी जान पर ये बेरहमी क्यों की ? कुदुशिया बोली ।

अरे नहीं अल्लाह तो हमेशा सब पर मेहरबान रहता है ।... ......दूसरी पड़ोसन रूबिया ने कहा ।

सब अल्लाह का खेल है, खालाजान ! वह जो चाहे कर दे, बन्दे के हाथ में कुछ नहीं है, अफसोस जाहिर करते हुए शकीला ने कहा ।

तू बजां फरमाती है, शकीला, कुदशिया ने बड़े ही दुखी मन से कहा ।

अल्लाह की नजर से आज तक कोई बच पाया है ? इसके पिछले कर्मों का फल ही यह नतीजा होगा ! बूढ़ी जिन्नत ने अफसोस जाहिर करते हुए कहा ।

अम्मीजान आपको ऐसा नहीं बोलना चाहिए, ईमाम साहब बाहर ही खड़े हैं, उन्होंने सुन लिया तो बेमतलब ही तूफान आ जायेगा, हमारे यहां तो पिछला जन्म मानते ही नहीं है ।

तो फिर तू ही बता नाहिद इस नन्हीं सी जान को यह किस बात की सजा मिली ?

कुछ भी हो अम्मीजान...............बीच में ही अपनी लम्बी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए इमाम रहमतुल्ला साहब बोले ।

यह तो अल्लाह की मर्जी है, वह जो चाहे कर सकता है, बस इस बच्चे की परवरिश ध्यान से करो । इसको आज से.... ......''आबिद'' के नाम से जाना जाये ।

बच्चा धीरे-धीरे तीन साल से भी बड़ा हो गया, कि एक दिन अचानक वह सोते-सोते कुछ बड़बड़ाने लगा ।

इस पर ऊपरी का असर है, ऐसा समझ कर जैनब तुरन्त मस्जिद में मौलवी के पास फूंक लगवाने गयी ।

मैं इस दुनिया से कुफर को खत्म कर दूंगा..............हर तरफ बस एक अल्लाह का ही दीन होगा, आबिद बेहोशी में बड़बड़ाता रहा ।

इस पर लगता है शैतान हावी हो गया है । मौलवी साहब ने कहा । मैं फातिहा पढ़कर फूंक मार देता हूँ, अल्लाह ने चाहा तो जल्दी ही ठीक हो जायेगा ।

मायूस जैनब आबिद को लेकर घर पर वापिस आ गयी, पर बच्चे की तबियत में कोई सुधार नहीं आया, और वह दिन पर दिन और भी बिगड़ती चली गयी ।

मैं भदुरिया जाऊँगा, वहां अपने बीवी बच्चों से मिलूंगा । जैनब बहुत ही ध्यान से आबिद की बातों को सुन रही थी ।

या अल्लाह रहम कर, इस बच्चे को क्या हो गया ?........ ......जैनब बहुत दुखी थी,

मैं एक शुद्ध वैष्णव ब्राह्मण था, ब्राह्मण ही रहूंगा, देखता

हूँ मुझे कौन रोकता है ? आबिद बेहोशी में बड़बड़ाता रहा ।

मौलवी साहब ! हड़बड़ाते हुए जैनब ने कहा- हजूर देखना मेरे बच्चे को क्या हो गया है ?

मौलाना ने बच्चे की नब्ज पकड़ी और कहा मैं अल्लाह से दुआ करूँगा, यह ठीक हो जायेगा, तुम हकीम अता खाँ से दो खुराक ले आना, हो सके तो बच्चे को भी साथ ले जाओ ।

जैनब की गोद में आबिद छटपटा रहा था, अचानक उसे एक हिचकी आई और उसकी गर्दन एक ओर को लुढ़क गई । घबराई हुई तेज दौड़ी और हकीम अता खां के पास पहुंच गई।

बच्चे पर ऊपरी हवा का बहुत गहरा असर था, जैनब तुमने आने में देर कर दी,..................इसे अब सुपुर्द ए खाक कर दो, हमीद से कहना, सबर से काम ले ।

रोती-चिल्लाती जैनब आबिद को लिए हुए घर ज्योंही लौटी, वहां जमघट लगा हुआ था । सबने अल्लाह से दुआं मांगी, शायद यही सब कुछ उसके हक में था, अल्लाह की मर्जी है उसमें कोई कुछ नहीं कर सकता.................. सोचते-सोचते सभी अपने-२ घरों को चले गये । और तभी पटाक्षेप हो गया एक न होने वाली घटना का, जिसे आज तक जानते हुए भी कोई नहीं समझ पाया ।

-लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित लघु साहित्य की संक्षिप्त सूची

क्रमांक	पुस्तकों के नाम	लेखक	मूल्य
१.	गीता में ईश्वर का स्वरूप	अमर स्वामी सरस्वती	३.००
२.	मूर्ति पूजा की हानियाँ	,,	१.००
३.	कौन कहता है अहिल्या पत्थर शिला हो गयी थी ?	,,	२.००
४.	कौन कहता है विवाह के समय रामजी की आयु पन्द्रह और सीताजी की आयु छः वर्ष थी ?	,,	१.००
५.	मजहब ही तो सिखाता है आपस में बैर रखना	रिसर्चस्कालर राकेश कुमार आर्य एडवोकेट	१.००
६.	मूर्ख बनाओ मौज उड़ाओ-प्रथम भाग (धार्मिक पाखण्डवाद)	,,	१०.००
७.	मूर्ख बनाओ मौज उड़ाओ-द्वितीय भाग (मुस्लिम तुष्टीकरण)	,,	१०.००
८.	मूर्ख बनाओ मौज उड़ाओ-तृतीय भाग (काँवड़ की हकीकत)	,,	१०.००
९.	मूर्ख बनाओ मौज उड़ाओ-चौथा भाग (आर्य समाज एक विश्लेषण)	,,	१०.००

क्रमांक पुस्तकों के नाम	लेखक	मूल्य
१०. मूर्ख बनाओ मौज उड़ाओ-पाँचवाँ भाग (जी का जँजाल जगराता : न सोवें न सोने दें)	लाजपत राय अग्रवाल (वैदिक मिशनरी)	१०.००
११. रजनीश:भगवान या शैतान ?	श्रीमती वीना गुप्ता एम०ए०	१.००
१२. सत्य साई बाबा का कच्चा चिट्ठा	,,	१.००
१३. स्वमन्त्व्यमन्त्व्या प्रकाश	महर्षि दयानन्द	३.००
१४ आर्योद्देश्य रत्नमाला	,,	३.००
१५. क्या भारत का एक विभाजन और होगा ?	लाजपत राय अग्रवाल (वैदिक मिशनरी)	१०.००
१६. धर्म जाए भाड़ में	,,	१०.००
१७ धर्म और रोटी	,,	१०.००
१८. अल्लाह हमें रोने दो	जहाँआरा बेगम	५.००
१९. वेद क्या है ?	पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय	२.००
२०. गाजीमियाँ की पूजा और हिन्दू	,,	२.००
२१. आर्य समाज और हिन्दू धर्म	,,	५.००
२२. हमारे स्वामी : महर्षि दयानन्द	,,	२.००
२३. आर्य समाज क्या है ?	,,	२.००

नोट : विस्तृत जानकारी के लिए प्रकाशन से सूची पत्र मंगायें।

प्रबन्धक
अमर स्वामी प्रकाशन विभाग